शासकीय उपयोग हेतु

प्रतिवेदन क्रमांक - 08

मझवार जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन

मार्गदर्शन
आशीष कुमार भट्ट (आई.एफ.एस.)
संचालक

निर्देशन
श्रीकांत कसेर
उप संचालक (प्रभारी)

संकलन एवं लेखन कार्य :-
जी.एल. बलेन्दर
अनुसंधान सहायक

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर (छ.ग.)

शासकीय उपयोग

प्रतिवेदन क्रमांक - 08

मझवार जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन

मार्गदर्शन
आशीष कुमार भट्ट (आई.एफ.एस.)
संचालक

निर्देशन
श्रीकांत कसेर
उप संचालक (प्रभारी)

-: संकलन एवं लेखन कार्य :-
जी.एल. बलेन्दर
अनुसंधान सहायक

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
क्षेत्रीय इकाई अम्बिकापुर-सरगुजा छ.ग.

अध्याय – एक

प्रस्तावना

1.1 पृष्ठ भूमि :–

संचालनालय आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर के पत्र क्र./टी.आर. आई/अनु./2018/228 रापुर दिनांक 27/04/2018 के द्वारा **''मझवार''** जाति का मानव शास्त्रीय अध्ययन का कार्य आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय इकाई अम्बिकापुर जिला–सरगुजा को प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश प्राप्त हुआ है।

विश्व में जनजातियों के वितरण की दृष्टि से अनेक विशालतम राष्ट्र है, इसी विशालता में से भारत में भी अनेक जनजातियॉ निवास करती है जो वर्तमान में भी सभ्यता से दुर है। कालान्तर में भारतीय धरा विभिन्न प्रजातीय समुहों की शरण स्थली रही है। पर–संस्कृतिकरण की प्रक्रिया भी भारतीय समाज में प्रारम्भ से रही है जो बाहय सभ्यता से सम्पर्क के पश्चात् भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं को बनाये हुए हैं, इसलिए वैरियर एल्विन ने जनजातियों के सम्बधं में कहा है कि ''आदिवासी भारतवर्ष की वास्तविक स्वदेशी उपज है, ये वे प्राचीन लोग है जिनके नैतिक आधार व दावे हजारों वर्ष पुराने है'' ।

भारतीय समाज विभिन्न प्रजातिय समूहों का संगम स्थल रहा है। ये जनजातियॉ प्रायः शहरी सभ्यता से बहुत दूर घने जंगलो, पर्वतो, घाटियों एवं पठारी क्षेत्रों में निवास करती है। प्रारम्भ में निरन्तर शुद्व जलवायु एवं कंद मूल फल के सेवन से इनका जीवन निरोग एवं स्वस्थ बना रहता था। स्वतः रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास होता रहता था। परन्तु वर्तमान में औधोगीकरण और शहरीकरण तथा जनसंख्या के बढ़ते दबाव के कारण औधोगीकरण ने इनके सम्पूर्ण परिवेश को ही दूषित कर दिया है।

1.2 भारतीय जनजातियॉ :– सामान्य परिचय

समान्यतः लोग आदिवासी शब्द का अर्थ ''पिछड़े हुए'' और असभ्य मानव समुह से समझते है जो एक सामान्य क्षेत्र में रहते हुए एक सामान्य भाषा बोलता है और सामान्य संस्कृति को प्रयोग में लाता है। वस्तुतः आदिवासी से तात्पर्य उस क्षेत्र विशेष का मूल निवासी होने का घोतक है। भारतीय संविधान(1950) के अनुच्छेद उपखण्ड 1 में जनजाति की परिभाषा को इस प्रकार स्वीकार किया गया है। राष्ट्रपति सार्वजनिक सूचना द्वारा जनजातियों, जनजाति या जनजातियों के भीतरी समुह में परिभाषित किये जाएंगे, वे अब अनुसूचित जनजाति कहलायेंगे।

जनजाति शब्द की उत्पति तथा अर्थ के विषय में भिन्न–भिन्न विचारधाराऐ है सन 1881 ई0 की जनसंख्या रिर्पोट में जनसंख्या आयुक्त श्री डॉ. एन. बेंस ने जातियों को उनके परम्परागत व्यवसाय के आधार पर वर्गीकृत किया। कृषक एवं चरवाहा जातियों की श्रेणी के अन्तर्गत उन्होने '' वन्य जातियों'' के नाम से एक पृथक उप शीर्षक बनाया।

सन् 1901 की जनसंख्या रिपोर्ट में उन्हे प्रकृतिवादी कहा गया। सन् 1911 ई0 में उन्हें जनजाति प्रकृतिवादी अथवा जनजातिय धर्म को मानने वाले लोग कहा गया। सन् 1921 ई0 की जनसंख्या रिपोर्ट में उन्हें पहाड़ी एवं जनजातियों का नाम दिया गया। सन् 1931 ई0 जनसंख्या रिपोर्ट में उन्हे आदिम जनजाति कहा गया। भारत सरकार अधिनियम सन् 1935 ई0 जनजातीय जनसंख्या को पिछड़ी जनजातियां नाम दिया गया। सन् 1941 ई0 जनसंख्या रिपोर्ट में केवल जनजातियॉ कहा गया।

प्रायः ''जनजाति'' शब्द की उपत्ति तथा अर्थ के सम्बधं में भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं। चूकि जनजातियॉ प्रायः शहरी सभ्यता से बहुत दूर घने जंगलो, पर्वतो, घाटियों एवं पहाड़ी क्षेत्रो में निवास करती आयी है। इन लोगों का जीवन प्रकृति के संघर्षमय था। अतः सामान्यतः लोग उन्हे आदिवासी समझते है जो ''पिछड़े वर्ग'' और ''असभ्य मानव समुह'' के रूप में एक सामान्य क्षेत्र में निवास करते हुए सामान्यत संस्कृति का अनुसरण करते हैं।

मुख्यतः भारतीय जनजातियों के सम्बधं में मानवशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों का मत है कि ये नीग्रीटो प्रोटोआस्ट्रलियड़(आस्ट्रिक या प्रो–द्रविडियन) तथा मंगोलियन प्रजाति के लोग है जो भारतीय परिवेश में सर्वप्रथम विराजित हुए। ये जनजातियॉ समुह धीरे–धीरे उप हिमालय पश्चिमी भागों की पहाड़ियों तथा वनों में मध्य भारत में नर्मदा तथा गोदावरी के बीच कृषि और शिकार करते हुए दक्षिण भारत के मुख्यतः पश्चिमी भाग में बस गए। ए.बी ठक्कर ने इन्हे ''आदिवासी'' नाम से पुकारा है।

टी.बी.नायक (1968) के अनुसार निम्नलिखित लक्षणों कि आधार पर जनजातियों को पहचाना जा सकता है।

(1) जनजाति समाज में कार्मिक अवलम्बन नगण्य होना चाहिए अर्थात वह पूर्णत स्वतन्त्र हो तथा उस जनजाति की सम्पूर्ण आवश्यकताएं बिना किसी समुदाय से विनियोग या सहायता के पूर्ण होनी चाहिए।

(2) जनजाति आर्थिक रूप से पिछड़ी होनी चाहिए– (अ) मुद्रा के लेन–देन के विषय में जानकारी नहीं

होनी चाहिए एवं इनकी आवश्यकताएं उसी स्थान से उपलब्ध हो जहॉ निवास करते हैं। (व) अपनी प्रचलित विधियों से प्राकृतिक सम्पदाओं का खनन कर रहे हों। (स) आर्थिक व्यवस्था आविकसीत हो। (द) आर्थिक दोहन की बहुत सी विधियॉ हो। (म) इनकी बोल—चाल की एक सामान्य भाषा हो। (र) जातीय समस्याओं को हल करने के लिए समाज में पंचायते हो तथा आर्थिक, राजनीतिक संगठन होना चाहिए। (ल) समाज में परिवर्तन की प्रवृत्ति न्यूनतम हो तथा अपनी संस्कति एवं रीति रिवाज से चिपके हुए हो। नायक के अनुसार जो समुह जनजाति कहलायेगा उसमें उपरोक्त लक्षण विधमान होना चाहिए।

इसी प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नवीन संविधान के निर्माण से आदिवासीयों या जनजातियों का संविधान के अनुच्छेद 341 व 342 के उपबंधो के अंतर्गत राष्ट्रपति द्वारा जारी किये गए (15) पन्द्रह आदेशो द्वारा अनुसूचित जनजातियों का पृथक—पृथक उल्लेख किया गया है। राष्ट्रपति द्वारा इन उपरोक्त धारों के अंतर्गत एक सूची जारी की गई, जिसमें समय—समय पर संशोधन भी किया जा रहा है। वर्तमान में संविधान के अनुच्छेद 342 के आधार पर अनुसूचित जनजाति का वन्य जाति, वनवाली, पहाड़ी लोग, आदिम जाति, आदिवासी आदि नामों से भी जाना जाता है।

1.3 अध्ययन का उद्देश्य :—

छत्तीसगढ़ राज्य के जिला रायगढ़, जशपुर, सरगुजा एवं कोरबा में निवासरत मझवार जाति की भौतिक संस्कृति, आर्थिक जीवन, सामाजिक संरचना, जीवन चक्र के संस्कार, राजनैतिक संगठन, धार्मिक जीवन, लोक परम्पराएॅ, जीवन परिवर्तन एवं विकास तथा मझवार जाति में ब्याप्त समस्याओं आदि पक्षों का विस्तृत अध्ययन कर, प्रतिवेदन छतीसगढ़ आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर को प्रेषित करने के उद्देश्य से किया गया है।

अध्याय – दो
अध्ययन क्षेत्र परिचय

मझवार जाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन मुख्यतः सरगुजा जिले से किया गया है। सरगुजा भारतीय राज्य छत्तीसगढ़ का एक जिला है। जिले का मुख्यालय अम्बिकापुर है। भारत देश के छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर–पूर्व भाग में आदिवासी बहुल जिला सरगुजा स्थित है। इस जिले के उत्तर में बलरामपुर जिला है, पश्चिम में सुरजपुर जिला है, दक्षिण पश्चिम में कोरबा जिला है, दक्षिण में रायगढ़ जिला है और पूर्व में जशपुर जिला है।

2.1 स्थिति :–

इस जिले की अक्षांशिय विस्तार 23′37′25 ये 24′6′17 उत्तरी अक्षांश और देशांतरिय विस्तार 81′37′25 ये 84′4′40 पूर्व देशांतर तक है। यह जिला भौतिक संरचना के रूप से विंध्याचल बघेलखण्ड और छोटा नागपुर का अभिन्न अंग है। इस जिले की समुद्र सतह से उंचाई लगभग 609 मीटर है।

2.2 स्थापना :–

इस जिले की स्थापना 1जनवरी 1948 को हुआ था जो 1 नवम्बर 1956 को मध्यप्रदेश राज्य के निर्माण के तहत मध्यप्रदेश में शामिल कर दिया गया। उसके बाद 25 मई 1998 को इस जिले का प्रथम प्रशासनिक विभाजन करके कोरिया जिला बनाया गया। एवं द्वितीय प्रशासनिक विभाजन कर जनवरी 2012 में बलरामपुर एवं सुरजपुर जिला का गठन किया गया। जिसके बाद वर्तमान सरगुजा जिला का क्षेत्रफल 5732 वर्ग किलोमीटर है।

2.3 नामकरण :–

सरगुजा के इतिहास से हमें यह पता चलता है कि सरगुजा कई नामों से जाना जा रहा है। एक ओर जहॉ रामायण काल में इसे दंडकारण्य कहते थे वहीं दुसरी ओर दसवीं शताब्दी में इसे डांडोर के नाम से जाना जाता था। यह कहना कठिन है कि इस अंचल का नाम सरगुजा कब और क्यों पड़ा। वास्तव में सरगुजा किसी एक स्थान विशेष का नाम नहीं है बल्कि समुचे भू–भाग को ही सरगुजा कहा जाता है। प्राचिन मान्यताओं के अनुसार पूर्व काल में सरगुजा जो नीचे दिये गये नाम से जाना जाता था।

- **सुरगुजा – सुर+गजा = अर्थात देवताओं एवं हाथियों वाली धरती।**
- **स्वर्गजा – स्वर्ग+जा = स्वर्ग के समान भू प्रदेश।**
- **सरगुजा – सुर+गुंजा = आदिवासीयों के लोगगीतों का मधुर गुंजन।**
- **वर्तमान में इस जिले को सरगुजा नाम से ही जाना जाता है।**
- **जिसका अंग्रेजी भाषा में उच्चारण आज भी SURGUJA ही हो रहा है।**

2.4 जलवायु :–

जलवायु वह भौगोलिक अवस्था है जो समस्त स्थानीय दशाओं को प्रभावित करती है। सरगुजा जिला भारत के मध्य भाग में स्थित है जिसके कारण यहॉ की जलवायु उष्ण–मानसुनी है। सरगुजा जिले में जलवायु मुख्यतः तीन ऋतु अवस्थाओं का होता है जो निम्नांकित है।

ग्रीष्म ऋतु :–

यह ऋतु मार्च से जून तक होती है चूंकि कर्क रेखा जिला के मध्य में प्रतापपुर से होकर गुजरती है इसलिए गर्मियों में सूर्य की किरणें सिधे पड़ती है, तथा तापमान उच्च रहता है। इस ऋतु में जिले के पठारी इलाको में गर्मीयॉ शीतल एवं सुहावनी होती है। इस दौरान सरगुजा जिले के मैनपाट जिसे छतीसगढ़ के शिमला के नाम से जाना जाता है, का तापमान अपेक्षाकृत कम होता है जिससे वहां का मौसम भी सुहावना होता है।

वर्षा ऋतु :–

यह ऋतु जुलाई से अक्टुबर माह तक होती है, जिले में जुलाई व अगस्त में सर्वाधिक वर्षा होती है। जिले के दक्षिणी क्षेत्र में वर्षा सर्वाधिक होती है। यहॉ की वर्षा मानसुनी प्रकृति की होती है।

शीत ऋतु :–

शीत ऋतु की शुरूवात नवम्बर में होती है और फरवरी माह तक रहती है। जनवरी यहॉ का सबसे ठण्डा महिना होता है। जिले के पहाड़ी इलाकों जैसे मैनपाट, सामरीपाट में तापमान 5 सेन्टीग्रेट से कम चला जाता है। कभी–कभी इन इलाकों में पाला भी पड़ता है।

2.5 भू–संरचना :–

यह क्षेत्र आर्कियन युग एवं गोडवाना क्रम की चट्टानों से मुख्यतः बना है इसमें अंशतः

धारवाड़ एवं गोडवाना क्रम के शैल समुह से कोयला प्राप्त होता है, कोयला उत्पादन के छोटे–छोटे बीस क्षेत्र है। जिसमें झगराखण्ड, चरचा, चिरमिरी, उमरिया, झिलीमिली, जोहिला एवं विश्रामपुर प्रमुख है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में बाक्साइड, चूना पत्थर एवं फायर क्ले भी मिलता है।

2.6 मिट्टी :–

यह मुख्यतः लाल पीली एवं अशतः लेटेराइट मिट्टी का क्षेत्र है, अल्प मात्रा में यहा काली मिट्टी भी पायी जाती है, अधिकांश भाग पर छिछली, कंकरीली, पथरीली लाल–पीली मिट्टी पाई जाती है। जिसमें पोषक तत्वों की कमी होती है।

2.7 वन :–

यहां वनो की अधिकता है। यहां उष्ण कटिबंधीय आर्द्र एवं शुष्क पर्णपाती वन पाये जाते है। साल वन बहुतायत से है। इस क्षेत्र में वनोपज अच्छी मात्रा में प्राप्त होता है।

2.8 वर्षा :–

उत्तरी क्षेत्र वनाच्छादित, पहाड़ियों वाला क्षेत्र होने के कारण प्रदेश में अधिक वर्षा वाला क्षेत्र है। इस क्षेत्र में औसत वर्षा 125 सेंटीमीटर से अधिक होती है। अम्बिकापुर एवं जशपुर में अधिक वर्षा होती है।

2.9 अपवाह तंत्र :–

बघेलखण्ड का पठार गंगा एवं महानदी के जल द्विभाजक का दक्षिणी भाग है। यद्यपि बघेलखण्ड का प्रदेश मुख्यतः सोननदी अपवाह तंत्र में आता है। महान, रिहन्द, कन्हर, हसदो, गोपद, बनास आदि उत्तरी क्षेत्र की प्रमुख नदियां है। इसमें उत्तर में बनास, गोपद, रिहन्द तथा कन्हार सोन की सहायक नदियॉ है। रिहन्द छुरी पहाड़ियों से निकलती है। इसका जल सोन नदी द्वारा गंगा अपवाह प्रणाली में मिल जाता है। दक्षिण के हसदो नदी महानदी की सहायक नदी है। जो देवगढ़ की पहाड़ियों से निकलती है। सोन, हसदो तथा इनकी सहायक नदियों ने रिहन्द, कन्हार, सरगुजा, हसदो, रामपुर, सोहागपुर आदि बेसिन का निमार्ण किया है।

2.10 फसलें :—

क्षेत्र की प्रमुख फसलें धान, ज्वार, मक्का, गेहू, जौ, दलहन(चना, तुअर) तिलहन(मूंगफली, तिल, अलसी, सरसों) तथा अन्य नगदी फसलों में गन्ना, फल, सब्जियॉ एवं मिर्च मसाले आदि है।

2.11 व्यवसाय :—

इस क्षेत्र के लोगो का प्रमुख व्यवसाय कृषि, वनोपज संग्रहण, मजदूरी एवं खनिजों का उत्खलन कार्य इस क्षेत्र का प्रमुख व्यवसाय है।

2.12 पर्यटन :—

इस क्षेत्र के पर्यटन स्थलो में गुरूघांसीदास राष्टीय उद्यान, मैनपाट, तातापानी, ठिनठिनी पत्थर, कैलास गुफा, रामगढ़, कुदरगढ़, रकसगांडा एवं अनेक जलप्रपात एवं अभ्यारण्य है।

2.13 जनजातियॉ :—

यह क्षेत्र घने जंगलो व पहाड़ियो से आच्छादित है। इस क्षेत्र में मुख्यतः उरांव, कंवर, मुण्डा, नगेसिया, कोरवा, भुंइहर, भूमिया, धनवार, सौंता, बियार, मझवार, माझी, खरिया, बिरहोर, कोंध, खैरवार, गोंड़, बैगा, अगरिया आदि जनजातियॉ निवास करती है।

2.14 जनगणना 2011 के कुछ प्रमुख तथ्यें :—

जनगणना 2011 के अनुसार सरगुजा जिले की कुल जनसंख्या 840352 है। जिसमें पुरूष जनसंख्या 398381 एवं महिला जनसंख्या 390662 है। सरगुजा जिले की लिंगानुपात 1000 पुरूषो पर महिलाओं की संख्या 980 है। कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 16.27 है। तथा अनुसूचित जाति कि कुल जनसंख्या में प्रतिशत 4.77 है एवं संख्या 40090 है तथा अनुसूचित जनजातियों की प्रतिशत कुल जनसंख्या में 57.36 तथा संख्या 482007 है। जिले की साक्षरता प्रतिशत 60.86 है।

2.15 अध्ययन शोध प्रविधि :—

मझवार जाति की मानवशास्त्रीय अध्ययन हेतु सरगुजा के जिला सरगुजा के विकास खण्ड अम्बिकापुर के मझवार जाति निवासरत ग्राम बकालो परिवार संख्या 26 एवं ग्राम खजूरी परिवार संख्या 150, ग्राम लक्ष्मणगढ विकासखण्ड उदयपुर परिवार संख्या 50, आदि ग्रामों का स्थल दौरा कर साक्षाकार सामुहिक परिचर्चा विधि, अवलोकन एवं अनुसूची का अनुशीलन कर प्राथमिक तथ्यों का संकलन प्रकाशित पुस्तकें, शासकीय प्रतिवेदनों आदि से किया गया है। द्वितीय

तथ्यों का संकलन प्रकाशित पुस्तकें, शासकीय प्रतिवेदनों आदि से किया गया है। प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण सारणीयन तथा विशलेषण पश्चात् प्रतिवेदन तैयार किया गया है।

2.16 जनजाति/जाति का भौगोलिक विवरण :–

छत्तीसगढ राज्य के लिए भारत सरकार द्वारा जारी अनुसूचित जनजाति में सूची में क्रमांक 29 पर मझवार जाति का उल्लेख हैं। मझवार जाति छत्तीसगढ राज्य में मुख्यतः सरगुजा जिले के विकासखण्ड अम्बिकापुर, सीतापुर, लखनपुर, उदयपुर एवं कोरबा जिले के कटघोरा तहसील व रायगढ एवं जशपुर जिले के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में निवासरत हैं। इस जाति के लोग कंदमूल, महुआ, गुल्ली, तेन्दुपता, हर्रा, गोंद, लाख, इमली, धवई के फूल आदि एकत्रित कर बेचते हैं। इसके अतिरिक्त कृषि तथा कृषि मजदूरी पर इनका जीवन अश्रित है।

2.17 उत्पति संबधी अवधारणाऍं/इतिहास :–

(1) इनकी उत्पति गोड़, कंवर और मुण्डा जनजाति के प्रमुखों का एक मिश्रित समुह जो जाति पंचायत के मध्य में बैठते थे। इनके साथ ही माझी तथा मझवार जनजाति की उत्पति साथ–साथ मानी गई है। कालान्तर में दोनों अलग–अलग स्वतंत्र जनजाति के रूप में विभक्त हुए।

(2) मझवार जाति के ग्राम खजुरी विकासखण्ड अम्बिकापुर जिला सरगुजा के श्री अमीर चंद मझवार द्वारा सामुहिक चर्चा के दौरान बताया गया कि मझवार जाति की उत्पति महाभारत काल के दानवीर राजा मोरध्वज से हुआ। मोरध्वज की पत्नी का नाम तारामती था। वे दानशीलता के कारण पुरे विश्व में विख्यात थे। इसकी जानकारी भगवान श्री कृष्ण को हुआ तो उन्होने मुनि नारद को अपने दरबार में बुलाया और राजा रानी की परीक्षा लेने के लिए उनके नगर चले गये, मुनि नारद बाघ का रूप धारण किया और भगवान श्री कृष्ण ने ऋषि मुनि का रूप धारण कर लिया। महल पहुचने पर श्री कृष्ण भिक्षाम देही–भिक्षादेही, कहकर चिल्लाने लगे, आवाज सुनकर राजा रानी तुरन्त उसके पास आऐं, इसके बाद कृष्ण बोलने लगे कि मेरा बाघ बहुत दिनों से भुखा है। इसे आपके बच्चे का मॉस चाहिए, राजा बहुत दानी था वह तैयार हो गया। कृष्ण ने शर्त लगाया कि अपने बेटे को हमारे सामने आरी से फाड़ोगें, और तुम्हारे ऑखो से आंसू नहीं आने चाहिए। राजा–रानी शर्त मानने को तैयार हो गया और अपने बच्चे को आरी से कांटने लगे, आरी से काट कर मॉस बनाकर बाघ के पास लाया गया। तब श्री कृष्ण ने कहा कि अब तुम्हारे बच्चे को

बुलाओ, राजा रानी अपने बच्चे ताम्रध्वज को बुलाने लगे, माता–पिता की आवाज सुनकर ताम्रध्वज विजय हो, विजय हो चिल्लाते हुए आने लगे, राजा–रानी की दानशीलता को देखकर श्री कृष्ण प्रसन्न हुए, और राजा–रानी को आर्शीवाद प्रदान किया। उत्पति संबधि अवधारण प्रमाणित नहीं लगता है।

(3) एक किवदंति के अनुसार – जशपुर क्षेत्र के राजा के साथ, मझवार राजा की सात बार युद्ध हुआ जिसमें सातों बार जशपुर क्षेत्र का राजा की विजय हुयी। मझवार राजा हताश हो कर करमदेव का स्मरण करने लगें, करमदेव मझवार राजा के समक्ष प्रकट हुए और पुछने लगें कि कहो वत्स क्या चाहिए। तब मझवार राजा अपना दुखड़ा करमदेव को सुनाने लगे मझवार राजा को करमदेव शक्ति प्रदान किये, तब मझवार राजा ने जशपुर राजा को आठवें बार में पराजित किया। करमदेव को मझवार शक्ति देने वाले देवता के रूप में पूजते हैं।

(4) एक किवदंति मझवार समाज के द्वारा बताया गया कि सरगुजा रियासत के राजा मझवार जाति के लोगों को अपने यहाँ बन्धुवा मजदूर के रूप में कार्य कराते थे, काम पर नहीं आने से जबदस्ती पकड़कर लाया जाता था, मना करने पर उसके उपर उबलते हुए पानी को डाल दिया जाता था। राजा के अत्याचार के डर में मझवार लोग जंगलो में छिपने लगे। और वहीं जीवन यापन करने लगे।

2.18 शारीरिक बनावट :–

मझवार जाति के लोगों की शारीरिक कद कम उंचाई व उनका रंग सांवला एवं नाक चपटा और वनांचल क्षेत्र में निवास करने के कारण बलिष्ठ कद काठी व परिश्रमी और उनके ओंट मोटे होते हैं।

2.19 जनसंख्या :–

मझवार जाति 2011 की जनगणना में छतीसगढ़ में इनकी जनसंख्या 55320 दर्शाई गई थी इसमें पुरूष 27613 तथा महिला 27707 थी।

2.20 साक्षरता प्रतिशत :–

मझवार जाति की कुल साक्षरता प्रतिशत 2011 की जनगणना के आधार पर प्रतिशत 38.3 थी जिसमें पुरूष की साक्षरता प्रतिशत 47.0 एवं महिला साक्षरता प्रतिशत 29.5 थी।

2.21 पारम्परिक व्यवसाय :–

मझवार जाति की पारम्परिक व्यवसाय जंगली उपज संग्रह व शिकार के साथ–साथ स्थायी कृषि करते हैं।

2.22 मझवार जाति निवासरत ग्राम :–

मझवार जाति समाज के बताये अनुसार सरगुजा जिला के निम्नाकिंत ग्रामों में समाज के लोग निवासरत है।

क्र.	ग्राम का नाम	क्र.	ग्राम का नाम	क्र.	ग्राम का नाम
1	बंदनाकोट	32	पम्पापुर	63	बिनिया
2	सेदम	33	बरगई	64	अरगोती
3	तेरईडांड	34	बरगवां	65	पटकुरा
4	गोविंदपुर	35	बंधान	66	केदवारी
5	चिपरकाया	36	चिलमाडांड	67	कुडेली
6	कदनई	37	करेया	68	सुतकालो
7	करदना	38	खूटा	69	मरियां
8	लैगू	39	गोरियापिपर	70	सितकालो
9	भोटको	40	कुसू	71	केसमा
10	खढ़धोवा	41	चांदो	72	पनकोती
11	बतौली	42	बेलदगी	73	बड़ेगांव
12	झरगवां	43	तपरकेला	74	सायर
13	पोटगहिला	44	झलका	75	बुंदे
14	मांजा	45	पुपुटरा	76	भकुरमा
15	चिरगा	46	ओस्गा	77	परसा
16	पोड़ी	47	लखनपुर	78	केते
17	पहरपारा	48	कटिंगा	79	घाटबर्रा
18	टिपटग	49	लोस्गा	80	बासेन
19	मोहनपुर	50	लोस्गी	81	तेन्दुटिकरा
20	धवईटिकरा	51	मांजा	82	चरेरी
21	रकेली	52	चोढ़िया	83	लक्ष्मणगढ़
22	नवापारा	53	कसरेया	84	सुखरीभदर
23	तपरकेला	54	लिपंगी	85	मानपुर
24	नवानगर	55	तुग्गा	86	महेशपुर
25	कर्म्हा	56	तुंगीनरवा	87	जगन्नाथपुर
26	खजूरी	57	पोड़ी	88	मेहनपुर
27	जेस्गा	58	पटपरिया	89	कालापारा
28	नरकालो	59	जगदीशपुर	90	मेण्ड्रा
29	कवलगीरी	60	बकालो	91	अम्बिकापुर
30	डोकेनारा	61	खैरबार	92	परसोड़ी
31	अमगसी	62	मुण्डगांव	93	चंदननगर

अध्याय – तीन
भौतिक संस्कृति

3.1 ग्राम का आकार :–

मझवार जाति के गांव नदी नाला के पास एवं वन के समीप बसा हुआ है। मझवार जाति के ग्रामों की बनावट गोलाकार या दीर्घवृतीय है। गलियों के दोनों ओर मकान बने हुए होते हैं। कई गांव में बसावट अलग–अलग भी पाया जाता है। किन्तु अधिकांश गांव का आकार गोलाकार या दीर्घवृतीय आकार ही पाया जाता है। अधिकांश गांवों में आम, इमली आदि का पेड़ भी देखने को मिलता है।

3.2 बसावट :–

मझवार जाति के लोग अन्य जातियों उरांव, गोंड, पनिका, नगेसिया, यादव आदि जाति व जनजातियों के साथ निवास कर रहें हैं। किन्तु मझवार जाति के मुहल्ले मुख्य गांव के पारा या मुहल्ले के रूप में अलग पाया जाता है।

3.3 घर की बनावट :–

मझवार जाति के लोगों का घर मिट्टी का बना होता है, घर के छत मिट्टी के बने खपरे से ढंका होता है। आंगन से घर में प्रवेश करने पर प्रथम कक्ष परछी (छपड़ी) होता है। यह लम्बा होता है। इसमें लगा दो कमरा होता है।

(अ) प्रथम कमरा इसके दो भाग होते हैं, एक भाग में रसोई घर तथा दूसरे भाग में भंडार हेतु एक धान की कोठरी तथा देवी–देवता का चबूतरा होता है।

(ब) द्वितीय कमरा :– यह शयन कक्ष होने के साथ–साथ कपड़े व अन्य घरेलू सामान रखने का कमरा होता है।

3.4 निर्माण विधि :–

घर बनाने के लिए जगह चयन के बाद उस स्थान का सर्व प्रथम पूजा अर्चना गांव के धार्मिक मुखिया द्वारा किया जाता है। घर बनाने के लिए चारों तरफ खूटी गाडा जाता है। खूटी से लपेट कर रस्सी बांधा जाता है। जिसके अंदर राख या चूने से लकीर बनाकर निशान बनाया जाता है। उसे अंदर नीव हेतु 1.5 फुट या 2 फुट गहरा खोदा जाता है। गड्डे में मिट्टी व पानी डालकर पैरों से रौंदा (मिलाया) जाता है। इस मिट्टी को नींव में रखा जाता है, नींव पूर्ण होने के पश्चात एक दिन रखने के बाद दिवाल उठाने के लिए मिट्टी के बड़े–बड़े ढेले को छोट–छोटे टुकडे

करने के पश्चात उसमें पानी डालकर भिगाया जाता है। भीगने के बाद उसमें धान अथवा कोदो के छोटे–छोटे टुकडे जो फसल मिसाई से प्राप्त होता है। जिसे स्थानीय भाषा में पेरौसिया कहा जाता है। डालकर पैर के माध्यम से मिट्टी में मिलाया जाता है। तत्पश्चात फावड़ा एवं पैर से मिट्टी को अच्छी तरह रौंदा जाता है। मिट्टी को चपचपा कर फावड़ा की मदद से मिट्टी से काटकर लोंदे बनाये जाते हैं। मिट्टी के लोंदे को नींव के उपर रखकर मिलाते हुए दिवाल उठाई जाती है। एक दिन में लगातार एक से डेढ़ फीट दीवाल उठा ली जाती है। मिट्टी सूख जाने पर उसके उपर 5 से 6 फीट ऊंची होने पर मयार लकड़ी को 1 से 2 फीट मोटी व घर की चौढ़ाई के अनुसार लम्बी होती है। लगाई जाती है, पुनः उसके उपर दीवाल उठाते है। मयार से लगभग 2–3 फीट के अंतराल में चारों तरफ लकड़ी के गुडके 3–4 फीट के अंतराल में चारों तरफ लगाते है। परछी (बरामदा) बनाने के लिए दीवाल के ऊंचाई 10–11 फीट होने पर दीवाल बनाना रोक दिया जाता है। मैयार के उपर लम्बी मोटी लकड़ी लगाते है। उस पर लकड़ी का पटिया को छेदकर बिठाते हैं। पटिया के दोनों तरफ 1.5 से 2 फीट के अंतराल में कदेरी (कांड) को डालकर कील ठोक दिया जाता है। कडेरी के उपर बांस या लकड़ी को फाडकर बिछा देते है। फिर 1–2 कडेरी को छोड़कर कील ठोक दिया जाता है, ताकि लकड़ी इधर उधर न खिसके बांस या लकड़ी के उपर मिट्टी से बना खपरा छा दिया जाता है। छत को ढालुदार बनाया जाता है। खपरा नालीदार लगभग 1 फीट लम्बा व 1/2 फीट चौड़ा होता है जिससे बरसात का पानी छत में रूक नहीं पाता है। मकान के दीवालों की पुताई सफेद मिट्टी या लाल मिट्टी पीली मिट्टी जो ग्राम में आसपास मिल जाती है, से करते है। घर के फर्श की लिपाई गोबर से करते है। दीवाल के किनारे छुही मिट्टी से व बीच का स्थान गोबर से लीपा जाता है।

3.5 पशुधन :–

पशुओं को रखने के लिए घर से अलग पशु सेड (घर) बनाया जाता है। जिसे कोठा (पशुघर) कहा जाता है। यह घर के समीप आंगन से लगा होता है, ताकि पशुओं पर नजर रखा जा सके, तथा समयानुसार उनकी देखभाल किया जा सके।

3.6 बाड़ी :–

घर के सामने आंगन तथा पीछे बाड़ी बनाई जाती है। बाड़ी का उपयोग बरसातों में सब्जियों के लिए होता है। बाड़ी को बांस या कांटेदार टहनी से चारो तरफ से घेर दिया जाता है, ताकि कोई जानवर अंदर न आ सके 3.4 फीट ऊंचा दीवा(वाउड्रीवाल)

उठा दिया जाता है। बाड़ी काउपयोग धान मिसाई के लिए भी किया जाता है। पशुओं का चारा पैरा आदि रखने के लिए 8–10 फीट की लकड़ी चारों तरफ गोलाकर गड़ाया जाता है। उसके उपर मचान बनाते है। पैरा को उसी के उपर डालकर मटकाकार बनाते हैं, व चारा (पैरा) को कलारी या हाथों से खीच पशुओं को देते हैं।

3.7 घर की स्वच्छता :–

घर की स्वच्छता एवं सफाई दैनिक एवं विशिष्ट अवसरों पर किया जाता है। प्रतिदिन घर की महिलाएं प्रातः आंगन की झाड़ू से साफ करती हैं। गोबर को पानी में घोलकर कर दो–तीन दिनों के अंतराल में आंगन में छिटा (छिढ़कना) लगाती हैं। मझवार जाति में गोबर को पवित्र माना जाता है। छिंटा लगाने से पूरा घर पवित्र हो जाता है, और घर में सुख शांति बनी रहती है। मझवार जाति के महिलाएं प्रतिदिन सुबह–शाम घर की आंगन को झाड़ू से साफ करती हैं, तथा सप्ताह में एक बार गोबर से पूरे घर की आंगन की लिपाई अवश्य करते हैं, तथा विशेष त्यौहारों के अवसरों पर घर की दिवालों को छुही या चुना एवं रंग से पोताई करते है। जिससे घर सुन्दर लगता है।

3.8 सजावट :–

मझवार जाति के लोग घर की सजावट काली मिट्टी या छुही मिट्टी की आकर्षक पोताई से करते हैं।

3.9 स्वच्छता एवं सफाई :–

मझवार जाति के लोग प्रातः काल शौच जाते है। शौच घर के दूर मैदान या वन में जाते हैं। शौच के पश्चात पानी से अंगों को साफ कर हाथों की सफाई मिट्टी से करते हैं। कुछ परिवारों के द्वारा राख एवं साबून का प्रयोग कर रहें है। वर्तमान समय में स्वच्छता अभियान में जागरूपता आने के कारण मझवार लोग अपने घरों में शासन की मदद से शौचालय निर्माण कर रहें है, और शौचालय का प्रयोग कर रहें है शौच से निवृत के पश्चात सरई, (सारजोम) या परसा, चरौटा आदि के तहनियों से अपने दांतो की सफाई करते हैं। कुछ प्रातः काल दैनिक क्रियाओं से निवृत होने के पश्चात मझवार महिला एवं पुरूष अपने–अपने कार्यो में व्यस्त हो जाते हैं। वे शीत ऋतु में अनियमित तथा ग्रीष्म ऋतु में नियमित रूप से दोपहर में स्नान करते हैं। वर्षाकाल में कृषि कार्य के बाद शाम को स्नान करते हैं। नहाते समय शरीर की सफाई हेतु बालों को धोने के लिए मुड़ मिट्टी का प्रयोग करते हैं, जो सामान्यतः काली मिट्टी होती है। कपड़ों को गर्म पानी और

राख से धोते हैं, वर्तमान समय में साबून का उपयोग भी करने लगे हैं, स्नान नदी, नाला, तालाब हैण्डपम्प एवं कुंआ आदि जल स्त्रोतों में करते हैं। स्नान के पश्चात शरीर एवं बालों को सरसों डोरी (महुआ का फल) का तेल लगाते हैं। स्त्रियां पूर्व में बालों की जुड़ा बंधन के लिए डोरी (रस्सी) का उपयोग करते थे, या बॉस को सिर के पिछले हिस्से में खोपा बांधती थी, वर्तमान में फीता तथा क्लिप की सहायता से बेनी बनाने लगी हैं। मझवार जाति के सुहागन महिलाएं विशेष श्रृंगार नहीं करती हैं, सिर पर संेदुर का मांग लगाती हैं। सोने चांदी की आभूषण बहुत कम महिलाएं पहनती हैं, इसका कारण अति गरीबी एवं पिछड़ान हैं।

3.10 वस्त्र विन्यास :–

मझवार जाति के वस्त्र विन्यास समकालीन होते है। मझवार सदस्य हरे, सफेद, नीले लाल रंगों के कपड़ों का प्रयोग करते हैं, उम्र एवं लिंग के अनुसार धारण किये जाने वाले वस्त्रों का विवरण निम्नलिखत हैं :–

3.11 पुरूष :–

(अ) बालक :– मझवार जाति में नवजात शिशु का छठी संस्कार तक पुराने कपड़े के टुकड़े में लपेटा जाता है। छठी के दिन से नये कपड़े का झबला पहनाया जाता है, पूर्व में दो वर्ष की उम्र से कमर में अंगोछा एवं सर्ट पहनाया जाता था। वर्तमान में पैंट एवं सर्ट पहनाते हैं शाला में प्रवेश के उम्र से सर्ट–पेंट पहनाते हैं, पूर्व में किशोर अवस्था में घोती, लुंगी, बनियान पहनाते थे, वर्तमान में सर्ट, टीशर्ट एवं फूल पैंट लुंगी बनियान पहनते हैं।

(ब) वस्यक :– वस्यक मझवार पुरूष चड्डी, अंगोछा, धोती, लुंगी, बनयान, कमीज पहनते हैं, तथा सिर पर गमछा बांधते हैं, या कंधे पर रखते है। वर्तमान में कुछ मझवार वयस्क सदस्य आधुनिक वस्त्र भी पहनने लगे हैं।

(स) **वृद्ध** :– वृद्ध मझवार पुरूष कमर से घुटने तक अंगोछा, धोती, लुंगी एवं शरीर के ऊपरी हिस्से में बनियान या गंजी, सर्ट (सलूखा) पहनते हैं। तथा सिर पर साफा बांधते है।

महिलायों की वस्त्र विन्यास :—

(अ) बालिका :— नवजात बालिका को छठी तक पुराने कपड़े में लपेटा जाता है। छठी के पश्चात दो वर्ष तक झबला, फ्राक पहनते हैं। स्कूल प्रवेश की उम्र से कमीज स्कर्ट फ्राक पहनती हैं, तथा किशोरी बालिकायें वर्तमान समय में सलवार, कुर्ता, स्कर्ट कमीज पहनते हैं। जबकि अन्य बालिकायें छोटी साड़ी, लुंगड़ी, ब्लाउज साड़ी पहनती हैं।

(ब) वस्यक :— वयस्क स्त्रियां पूरी लम्बाई की रंगीन साड़ियां ब्लाउज व साया पहनती हैं।

(स) वृद्ध महिला :— मझवार वृद्ध महिलाएं घुटने से नीचे तक की साड़ियां ब्लाउज पहनती है। कुछ वृद्ध एक ही साड़ी को पुरे शरीर में लपेट लेती है। विधवा स्त्री सफेद साड़ी व पट्टा बांधती है। मझवार जाति के लोग अपने वस्त्रों की नियमित रूप से स्नान के पूर्व सादा पानी से धो लेते हैं।

3.12 आभूषण :—

मझवार जाति के स्त्री पुरूष श्रृंगार सुरक्षा व प्रतीक हेतु आभूषण धारण करते है। आभूषण स्थानीय हाट—बाजार, मेले, फेरीवाला एवं स्थानीय दुकान से क्रय किये जाते हैं, मझवारो की आभूषण इस प्रकार हैं पायल, बिछिया, रूपया माला, नथनी, करधनी, ऐंठी आदि आभूषण पहनते है। मझवार आर्थिक रूप से कमजोर होने से सोना चांदी में आभूषणों का उपयोग नहीं करते हैं।

3.13 गोदना :—

जनजाति समाज में गुदना को स्थायी आभूषण माना जाता है। जनजातियों का इसके पीछे धारणा यह है कि धातु के आभूषण व्यक्ति कि मृत्यु के पश्चात उतारा जाता है। किन्तु गोदना ही एक ऐसा आभूषण हैं जिसे मरने में बाद भी नहीं उतारा जाता है। मझवार जाति में गोदना प्रथा पायी जाती है। मझवार महिलाएं अपने पैर, बाये हाथ, घुटना एवं हथेली में गोदना गुदवाती हैं।

क्र.	नाम	निर्माण सामग्री	लक्ष्य
1	धनुष—बाण	बांस, रस्सी, लोहा	बडे जानवर
2	खरहा—जाल (खेरहा जाल)	सन की रस्सी (पटसन)	खरगोश
3	गुंडरी पिंजरा	जाल रस्सी	गुंडरी पक्षी
4	बगउ फांदा	जाल रस्सी	तितर लावा पड़की

5	लासा	महुआ पीपल बड़ वृक्ष का दूध व सरसों का तेल	सभी पक्षी
6	धोपी फांदा	जाल, बांस, रस्सी	पड़की
7	गोटी फांदा	बैल पूछ का बाल रस्सी गोंटी	सभी

3.14 कृषि एवं शिकार :—

मझवार जाति के लोग कुशल शिकारी होते है, वे अपने शिकार के हथियार स्वयं बनाते हैं। वर्तमान समय में प्रतिबंध के कारण शिकार का प्रचलन नहीं हैं, किन्तु मनोरंजन एवं फसलों की सुरक्षा हेतु गुप्त रूप से शिकार किया जाता है। इसके शिकार उपकरण निम्न हैं :—

3.15 पशुपालन :—

मझवार जाति के लोग निम्नांकित पालतु पशु—पक्षियों को पालते व उसके उपयोग करते हैं, जैसे, गाय, बैल , बकरी, सुअर, मुर्गी, आदि।

3.16 वनोपज संग्रहण :—

मझवार जाति के लोग आदिकाल से वनों का स्वतंत्रता पूर्वक उपयोग करते रहें हैं। मझवार जाति के लिए वन आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का आधार हैं, मझवार लोग जंगलों से महुवां चार चिरौंजी, गोंद, सरई बीज, तेन्दुपत्ता, मोहलइन का संग्रहण करते हैं।

3.17 रसोई व गृह उपकरण :—

मझवार जाति के लोग अपने दैनिक जीवन में निम्नांकित गृह उपकरणों का प्रयोग करते हैं:—

क्र.	नाम	मूल्य	निर्माण सामग्री	निर्माता	उपयोग
1	हॉड़ी (कोही)	20—25	मिट्टी	कुम्हार	भात बनाने में
2	तावा	10—20	मिट्टी	कुम्हार	रोटी सब्जी बनाने में
3	डेकची	10—120	एल्यूमिनियम	बाजार	भात बनाने व पानी लाने
4	कड़ाही	50—100	एल्यूमिनियम	बाजार	सब्जी बनाने
5	गगरी	50—100	मिट्टी	कुम्हार	सामाजिक आयोजन में पानी रखने में
6	चटुवा	10—30	बांस सरई	बाजार	भात बनाने में और निकालने में
7	थाली	20—50	एल्यूमिनियम	बाजार	भोजन खाने में
8	गिलास	10—20	एल्यूमिनियम	बाजार	पानी पीने में
9	लोटा	40—200	एल्यूमिनियम	बाजार	पानी पीने में
10	कप	30—100	चिनी मिट्टी	बाजार	पानी व चाय पीने में

11	हॅसिया (दात्रम)	20–30	लोहा	बाजार	सब्जी काटने में
12	छुरी (कातु)	5–15	लोहा	स्वयं	सब्जी काटने में
11	पहसुल	40–50	लोहा	स्वयं	सब्जी काटने में
13	ढेकी (ठेयरी)	10–30	लकड़ी लोहा	स्वयं निर्मित	अनाज कुटने में
14	सील–लोड़हा (ससंगटूंकूगुंड़ गु	10–15	पत्थर	स्वयं निर्मित	मसाला पीसने में
15	ओखरी	10–20	लकड़ी लोहा	स्वयं निर्मित	अनाज कुटने के लिए
16	जन्ता	100	पत्थर	बाजार	अनाज पीसने के लिए
17	पटनी	–	लकड़ी	स्वयं निर्मित	तेल निकालने के लिए
18	पुरली	–	छाल	स्वयं निर्मित	तेल निकालने के लिए
19	पीढ़ा	–	लकड़ी	स्वयं निर्मित	बैठने में
20	सुपा	10–20	बांस	बाजार	अनाज सफाई में
21	चुल्हा	–	मिट्‌टी	स्वयं निर्मित	भोजन बनाने में

गृह उपकरणों के नाम :–					
1	झाडू	–	बांस एवं पौधे	स्वयं	सफाई में
2	तामी	20–40	लकड़ी	स्वयं	अनाज नापने में
3	पैला	20–40	लकड़ी	स्वयं	अनाज नापने में
4	गरना	–	साल, मोहलईनपत्ता	स्वयं	महुआ भण्डारण में
5	गुंगु	–	बांस व पत्ते	स्वयं	वर्षा में
6	खटिया	–	लकड़ी रस्सी	स्वयं	सोने, बैठने
7	बौसूला	20–50	लोहा	स्वयं	लकड़ी छिलने
8	रूखना	30–100	लेहा	बाजार	लकड़ी में छेद करने
9	पटनी	–	लकड़ी	स्वयं	तेल निकालने में
10	पुटली	–	छाल	स्वयं	तेल निकालने में

3.18 वाद्ययंत्र :—

इस जाति के लोगों का प्रमुख वाद्ययंत्र मांदर (मौदड़), ढोल, बांसुरी, डडखर, पैजन का उपयोग का करमा, छेरता आदि त्यौहारों के उपलक्ष्य में करते हैं।

3.19 भोजन :—

मझवार जाति के भोजन में मुख्यतः चावल, दाल तथा मौसमी सब्जियां खाद्य पदार्थ है। चांवल का भात तथा मड़िया (महुआ) कोदो, आटा रोटियां बनाया जाता हैं, रात में बचे भात में पानी डालकर रख दिया जाता है। जिसे अगले दिन खेत जाने के पूर्व खाते हैं। इसे बासी कहते हैं, दैनिक जीवन में भात के साथ दाल व उपलब्धता अनुसार सब्जी खाते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में दाल व सब्जी नियमित रूप से नहीं बनाया जाता है। इन परिवारों में रसेदार सब्जी या नमक मिर्च टमाटर की चटनी के साथ भात खाया जाता है। मझवार परिवारों में खाद्य तेल का उपयोग बहुत कम किया जाता है। गर्मीयों में मक्का व चांवल की कनकी (छोटे टुकडे) को अधिक पानी में उबालकर पेज बनाते हैं। इसे खेत जाने के पूर्व पीते हैं, तथा खेत मे भी ले जाते हैं, पेज मिर्च की चटनी व प्याज के साथ पीते हैं।

मझवार परिवारों में खेत व बारी में उत्पादित चांवल , मक्का, उड़द, कुरथी की दाल तथा आलु, मुनगा, तोरई, टमाटर, मिर्च, पूटू, मशरूम, (खुखड़ी) आदि खाते है। इन सब्जीयों को सुखाकर भी रखा जाता है। मझवार परिवारों में वयस्क सामान्यतः दिन में दो बार भोजन दोपहर व शाम के समय में करते है। सुबह खेती मजदूरी या जंगल जाने के पूर्व बासी या पेज खाते हैं। बच्चे दिन में 3—4 बार भोजन करते हैं।

मझवार जाति में उपरोक्त खाद्य या भोजन के अतिरिक्त वर्षाकाल में जब परिवार में चांवल की कमी हो जाती है। साल बीज व महुआ से भी भोज्य पदार्थ बनाये जाते हैं, जो निम्न हैं :—

1. **सरई बीज—महुआ** :— इसमें साल बीज व सूखे महुवां फूल को समान भाग में लेते हैं तथा साल बीज को कौसलापन दूर होने तक उबालते हैं एवं पानी निकाल कर खुखाते है। महुआ को झाझी (मिट्टी की पात्र) में भुंजते है। इसके बाद दोनों को मिलाकर आटा के सामान बना लेते हैं और इसे किसी बर्तन में रख देते हैं जो जम जाता है। गर्मीयों या बारिश के दिनों में इसे खेत जाने के पूर्व खाते है। यह कई दिनों तक सुरक्षित रहता है।
2. **मक्का—महुआ** :— मक्का व महुआ का लाटा बनाने की विधि भी साल व महुआ के लाटा के समान हैं।

3. भाफना :— इसे बनाने हेतु इमली के बीज को भुनकर ढेकी में कुटते हैं। जिससे बीज का छिलका उत्तर जाता है। इसके पश्चात महुवां को धोकर इमली के साथ उबालकर कौशला पानी फेंक देते है। दूसरे बर्तन मे साल के बीज को उबालकर कौशाला पानी फेंक देते हैं, और तीनों को एक साथ मिला देते हैं, और एक से डेढ घंटा पकाने पर चाशनी के समान पक जाता है। जिसे ठंडा होने के दो दिनों तक रखते है।

4.लटौरी : लटौरी बनाने के लिए महुवा को पानी में भीगोकर पीसा जाता है। इसमें मक्का को डेंकी में कुट—कर मिलाया जाता हैं, और उसे भुजिया कर बनाते हैं, उसे तीन दिन तक खाया जाता हैं।

3.20 मादक पदार्थ :—

मझवार जाति के लोगों द्वारा पेय के रूप में शराब, हड़ीया का उपयोग वयस्क स्त्री व पुरूष करते हैं, मादक पदार्थो का सेवन प्रायः संध्या, साप्ताहिक हाट बाजार, त्यौहार, अतिथि सत्कार, आंगन धार्मिक सामाजिक आयोजन के दौरान किया जाता है। शराब एवं हड़ीया पारम्परिक विधि से स्वयं बनाते हैं, या क्रय करते है। मझवार सदस्य नशे के लिए तम्बाकू का प्रयोग भी बहुतायक करते है। प्रौढ़ व वृद्ध जन तम्बाकू सेवन करते है। तम्बाकू पत्ती स्थानीय बाजार से खरीदते हैं।

मादक वस्तुएं बनाने की विधि

हड़िया चांवल का शराब बनाने की विधि :—

सामग्री :— उसना चांवल या कोदो का चांवल, रानु गोटी।

वर्तन :— मिट्टी का घड़ा भात (चांवल) बनाने का वर्तन (गंजी या डेचकी)

विधि :— उसना चांवल को चोवा भात (बिना पसिया निकाले) बनाकर उसे साफ जमीन में फैला दिया जाता है। चांवल ठण्डा होने पर इसमें रानू गांटी को पीसकर उचित मात्रा में (सामान्यतः 10 किलो चांवल में 5 किलो) मिला दिया जाता है। तत्पश्चात इसे मिट्टी के घड़े में डालकर घड़े के मुंह को अच्छी तरह से पतल लगाकर बांध दिया जाता है। लगभग एक सप्ताह बाद चांवल में हल्का खट्टापन आ जाता है, एवं रसभर जाता है, और इस तरह हड़िया तैयार हो जाता हैं।

परोसने की विधि :— घड़े को खोलकर इस भरे चांवल को निकाला जाता है। इसे मेरा कहा जाता है। मेरा में उपर से पानी डाला जाता हैं, एवं पैरा (पुआल) लगाकर निचोड़ा जाता है। निचोड़े हुए पानी को बाल्टी या डेकची में ररखकर फिर पत्ते के दोने में चखना (खाने के लिए कुद चटपटा चीज या सब्जी) के साथ परोसा जाता है।

(रानू गोंटी – चांवल का आटा, सरई, साजा, चार, पेड का पत्ता एवं छाल, जंगली जड़ी–बुटी को पीसकर बनाया गया गोली होता हैं।)

महुआ शराब बनाने की विधि :– 3–4 किलो सुखे महुआ को एक हाड़ी में 5–7 दिनों तक पानी में भिगाकर रखा जाता है। महुआ को अच्छी तरह सड़ाने के लिए इसमें गोली जो आयुर्वेदिक जड़ी बुटी से बनी होती है, को डालते है। इसे गोली कहते है। सड़ा हुआ महुआ को एक अन्य बड़े बर्तन मे डालकर रखा जाता है, एवं महुआ के बराबर मात्रा में पानी डाला जाता है। बड़ा बर्तन के मुंह में एक छेददार मिट्टी का बर्तन जिसे झांझी कहते हैं, रखा जाता है। झांझी के अन्दर शराब एकत्र होने के लिए बर्तन और रखा जाता है। झांझी के मुंह में उपर एक छोट डेकची में पानी रखा जाता है। भाप बाहर न निकले इसके लिए बड़ा डेचकी व झांझी के मुह के बराबर कपड़ा लपेटा जाता है। बड़ा डेकची जिसमें महुवा होता है, को चुल्हें में रखकर आग जलाया जाता है। तेज आग आंच में महुआ गरम होता है, और भाप के रूप में छेददार बर्तन के अंदर रखे हुए डेंकची में बुंद–बुंद शराब एकत्र होती है। शराब को देवी देवता को अर्पण कर उनका उपयोग करते है।

अध्याय – चार
आर्थिक जीवन

4.1 सम्पत्ति संबंधी अवधरणा :–

मझवार जाति छत्तीसगढ़ के वनांचल एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवासरत है। इस कारण मझवार जाति के सदस्य प्राकृतिक एवं मानवीय पार्यावरण में भिन्नता के कारण बहुस्तरीय आर्थिक जीवन निर्वाह कर रहे हैं, अर्थात मझवार जाति के सदस्य मुख्यतः कृषि, मजदूरी, वनोपज संग्रह आदि कार्यो में संलग्न हैं। मझवार जाति उपरोक्त साधनों के द्वारा अपने सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति किया जाता है

1. सम्पत्ति :–

मझवार जाति में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साधनों को सम्पत्ति माना जाता है। सम्पत्ति स्वअर्जित एवं पूर्वजों से हस्तांतरण द्वारा प्राप्त होती है। मझवार जाति में स्वामित्व के आधार पर सम्पत्ति को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

2. व्यक्तिगत सम्पत्ति :–

स्व उपयोग हेतु अर्जित अथवा क्रय किया गया अथवा प्राप्त वस्तुएं/सम्पत्ति व्यक्तिगत सम्पत्ति माना जाता है। इसमें वादय यंत्र, शिकार के उपकरण आदि शामिल किया जाता है

3. परिवारिक सम्पत्ति :–

परिवार के सदस्यों द्वारा परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अर्जित सम्पत्ति, परिवारिक सम्पत्ति माना जाना है। इसमें परिवारिक विभाजन से प्राप्त पैतृक सम्पत्ति भी शामिल है। इसके अंतर्गत मकान, पशु, भूमि, आनाज आदि आते हैं।

4. सामुहिक सम्पत्ति :–

सामुहिक सम्पत्ति से आशय ऐसी सम्पत्ति से हैं जो पूरा मझवार जाति के लोग उपयोग में लाते हैं। इसके अंतर्गत तालाब, चारागाह आदि तथा ग्राम के भौगोलिक–राजनैतिक क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले नदी–नाले वन पहाड़ आदि समुदाय की सामुहिक सम्पत्ति माना जाता है।

4.2 सम्पत्ति का उत्तराधिकार एवं विभाग :–

मझवार जाति पितृ सत्तात्मक समाज होने के कारण सम्पत्ति का हस्तांतरण पिता से पुत्रों को होता है। मझवार जाति में ज्येष्टधिकार की प्रथा है। जिसके अंतर्गत सबसे बड़े पुत्र को परिवार का भावी मुखिया होने का परिवारिक व सामाजिक कार्यो के निर्वाहन की जिम्मेदारी होने के कारण कुछ या एक हिस्सा ज्यादा देते हैं, जिसे टिकैत (कानी हिस्सा) कहते हैं। शेष सभी भाईयों को सामान वितरण होता है। सम्पत्ति के विभाजन में यदि माता–पिता जीवित हो तो एक भाग देते है।

जिसमें छोटा या बड़ा पुत्र कृषि करता है।, माता पिता की मृत्यु के पश्चात माता–पिता का हिस्सा सभी भाईयों में सामान अनुपात में बांटा जाता है। घर की जमाई, दस्तक पुत्री के पश्चात होने वाले पुत्र भाई की विधवा को सामान भाग में हिस्सा देते है। सामान्यतः मझवार जाति में बहनों को कृषि भूमि में हिस्सा नहीं दिया जाता है। उसे तीजा पोला त्यौहार के अवसरों में भाई अपने–घर में लेकर आता है, व इस अवसरों पर नया साड़ी आदि भेंट करते हैं। जिससे भाई–बहनों में प्रेम व्यवहार बना रहता है, और बहने पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा नहीं लेती है।

4.3 अर्थ–व्यवस्था (आय प्राप्ति के मुख्य साधन धंधे) :–

किसी भी समाज की अर्थव्यवस्था उसके सामाजिक शैक्षणिक एवं धार्मिक स्थिति को निर्धारित करती है। भारतीय वर्ण व्यवस्था में जाति व्यवसाय का मुख्य आधार प्राचीन काल में अपनाई गई व्यवस्था थी। इसके आधार पर ही जातियों का सामाजिक स्तरीकरण निर्भर है। किसी भी जाति के सामाजिक स्थिति एवं निर्योग्यताओं के अध्ययन के लिए उस जाति का आर्थिक जीवन का अध्ययन किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा संभाग में निवासरत मझवार जाति का आर्थिक जीवन निम्न पारम्परिक कार्यो पर आधारित हैं :–

1. कृषि
2. कृषि मजदूरी
3. वनोपज का संग्रहण
4. शिकार
5. मत्स्य आखेट
6. पशुपालन
7. सरकारी नौकरी
8. अन्य मजदूरी

प्राय : मझवार जाति के लोग इन्ही आर्थिक साधनों से आय प्राप्त करते हैं व अपने जीवन यापन करते हैं।

4.4 आर्थिक कार्यो का विवरण :–

मझवार जाति के आर्थिक कार्यो का विवरण निम्नलिखित हैं :–

1. कृषि :–

कृषि मझवार जाति के आर्थिक संरचना का सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं, कृषि पूरे परिवार या व्यक्ति द्वारा किया जाता है, मझवार अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। मझवार सदस्यों

द्वारा अपने कृषि भूमि पर कृषि कार्य करते हैं। मझवार निवासरत क्षेत्रों में सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने के कारण उनकी कृषि वर्षा पर आधारित है। मझवार जाति के लोग धान, मक्का तथा बाजरा, उड़द, सरसों, कुरथी आदि फसलों का उत्पादन कर अपनी दैनिक, वार्षिक खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास करते हैं। मझवार परिवार अपने आवश्यकता मौसम एवं भूमि के अनुसार एक निश्चित फसल चक्र या फसल कलैण्डर का पालन करते हुए कृषि कार्य सम्पादित करते हैं, जो निम्नानुसार है :–

(अ) धान :–

धान की खेती जेठ माह के शुक्ल पक्ष में धान को नई टोकनी में रखकर दीप, धूप, नारियल, अगरबत्ती जलाकार हल्दी पानी छिड़कर पूजा करते हैं। खेत में धान की प्रथम मुट्ठी छोड़ने के पूर्व घर के देवी–देवता का मन ही मन स्मरण करने के बाद मुट्ठी से धान को खेत में छोड़ा जाता है। इस कर्मकाण्ड को **''मुईठ छोरा''** कहते हैं, धान मझवार जाति का मुख्य उपज है धान का पैदावार मानसूनी वर्षा पर निर्भर है, फसल कटने के पश्चात गीले खेत की जुताई करके छोड़ देते हैं। इसके पश्चात बैशाख माह से खेत की मरम्मत, मेड़ बनाने एवं जुताई का कार्य प्रारंभ करते ह। इसके पश्चात उत्पादन वृद्धि के लिए गोबर खाद डालते हैं, **पूर्व में खाद के लिए वन से सुखी पत्तियों या वृक्ष की शाखायें लाकर खेंत में जला देते थे एवं राख को पूरे खेत में बिखेर देते थे। मझवार कृषकों द्वारा रासायनिक उर्वरकों का कम प्रयोग किया जाता है, अर्थात परम्परागत हल–बैल खाद विधि से ही कृषि कार्य किया जाता हैं।**

(ब) मक्का तथा बाजरा :–

मक्का तथा बाजरा की खेती घर के समीप बाड़ी में किया जाता है। बाड़ी में हल से जुताई कर गोबर खाद डालते हैं, इसके पश्चात वर्षा के प्रारंभ या आषाढ़ महीने में मक्का व बाजरा के बीज को मिट्टी में ढक देते हैं, मक्का व बाजरा के पौधे परिपक्व होने के पश्चात फसल तैयार होता है। जिसे भादों–कुंवार माह में काट लिया जाता है। इसके गुच्छे बनाकर व दाने निकालकर सुरक्षित रखा जाता है। मक्का व बाजरा खाद्यान या नगद फसल दोनों रूपों में उपयोग किया जाता है।

(स) उड़द :–

उड़द की खेती घर के समीप बाड़ी या भर्री (डांड) में किया जाता है। मझवार परिवार काला उड़द आषाढ़ व कुंवार माह तक उत्पादन करते है। उड़द के लिए वर्षा के पश्चात जुताईकर गोबर खाद डालकर भूमि तैयार किया जाता है, और उड़द को छिड़ककर बो देते हैं। उड़द के पौधे के विकसित होने पर अन्य दूसरे खरपतवार व घास को निकाल दिया जाता है, तथा पालतू एवं अन्य पशुओं से सुरक्षा किया जाता है।

(द) सरसों :–

मझवार परिवार सरसों की खेती अपने घर की बाड़ी में कुंवार से अगहन माह में करते हैं, तथ सरसो बीज हाथों से छिड़क कर बुनाई कर देते हैं। मझवार सरसों की भाजी का उपयोग सब्जी के रूप में करते हैं। अगहन माह में फसल के पकने के पश्चात काटकर सुखा देते हैं, और सुखने के बाद लकड़ी के डण्डे से पीट–पीटकर बीज अलग कर लिया जाता है। सरसों को मोहलईन पत्ता का शंकू आकार की पात्र (जिसे पोटीम) में भण्डार कर सुरक्षित रखा जाता है।

(ई) कुल्थी (हिरवां) :–

मझवार परिवार कुल्थी फसल की खेती डाड़ (भर्री) या बाड़ी में भादों से अगहन माह के मध्य करते हैं। इसके लिए भूमि की सफाई कर जुताई करते हैं, और आवश्यकतानुसार गोबर के खाद का उपयोग करते हैं। भूमि तैयार होने पर कुल्थी बीज का छिड़काव कर देते हैं। पौधे के वृद्धि कि लिए आवश्यकतानुसार खर–पतवार व घास की सफाई करते हैं। फसल तैयार होने पर उसे काटकर मिसाई करते हैं, और दाल सब्जी के रूप में उपयोग करते हैं।

2. वनोपज संग्रहण :–

मझवार जाति के लोग वनों, जंगलों, पहाड़ों के आस–पास दुर्गम क्षेत्रों में निवासरत होने के कारण लघुवनोपज उनकी आर्थिक जीवन का आधार है। मझवार जाति के लोग अपने उपयोग एवं विक्रय हेतु मौसम के अनुरूप वनोपज का संकलन करते हैं। मझवार वनों से महुआ, तेन्दुपत्ता, कंदमूल, चार, चिरौंजी, सरईपान, मोहलाईनपत्ता, सरई बीज, चरौटा बीज, गोंद आदि का संकलन कर बाजार में विक्रय करते हैं, या फिर नमक के रूप में विनियम किया जाता है। संकलन कार्य किशोर युवा एवं वयस्क स्त्री एवं पुरूषों द्वारा किया जाता है।

संकलन कार्य सुबह 3–4 घण्टे तथा शाम को 2–3 घण्टे किया जाता है। संकलन कार्य टांगी (कुल्हाड़ी) झाड़ी या मोरली (टोकनी) सबल (लाया) की सहायता से किया जाता है।

3. **कृषि मजदूरी** :– मझवार जाति के लोग अपनी भूमि में कृषि करने के बाद समय मिलने पर ग्राम में अन्य किसानों के यहां कृषि मजदूरी करने जाते है। **क्योंकि अधिकांश मझवार परिवार सीमांत कृषक हैं,** इसलिए अपने गांव व गांव के आसपास के दुसरे ग्रामों में कृषि मजदूरी के रूप में कार्य कर अपनी आमदनी में वृद्धि करते हैं।

4. **पशुपालन** :–

मझवार जाति के लोग अन्य जातियों की तरह ग्रामीण क्षेत्र के लोग दुध हेतु गाय, कृषि हेतु बैल, भैंसा व अन्य पशुओं बकरी, मुर्गी, सुअर आदि का पालन करते हैं। गाय बैल, भैंस, बकरी से प्राप्त गोबर का उपयोग खाद के लिए करते हैं।

5. **शिकार** :–

मझवार जाति की आर्थिक संरचना में शिकार एक महत्वपूर्ण भाग है। **शिकार उदरपूर्ति हेतु मांस प्राप्ति के साथ–साथ बहादुरी एवं सामूहिकता का परिचायक है।** शिकार संकलन के कार्य खाली समय में किया जाता है। वर्तमान में शिकार पर शासकीय प्रतिबंध होने के कारण अल्प प्रचलित है। स्त्रियों का शिकार पर जाना निषेध है। शिकार हेतु तीर–धनुष, बरछा, गुलेल, टांगी (कुलहाड़ी) तब्बल (फरसा), गंडसा एवं अनेक प्रकार के जाल आदि हथियारों का प्रयोग किया जाता है।

6. **मत्स्याखेटः**–

मझवार जाति के स्त्री व पुरूष वर्षा एवं शीत ऋतु में नदी, नाला, तालाब तथा खेत में एकल या सामुहिक रूप से मछली मारने का कार्य करते हैं। मछली मारने का कार्य स्वयं के खाने हेतु किया जाता है। मछली मारने का कार्य दोपहर या शाम के समय में किया जाता है। मछली मारने के लिए बंशी, गरी, ढेका, जाल, पुरला, शुरपी, रेंगा जाल आदि का प्रयोग करते हैं। महिलायें छिछाई विधि से गढढे या डबरा से पानी फेंक कर मछली पकड़ती है। सामुहिक रूप से प्राप्त मछली का सामान वितरण किया जाता है। किन्तु मछली जाल के स्वामी को एक भाग अतिरिक्त दिया जाता है। **मझवार सदस्य टेंगना, गरई, नोनाई, खोक्सी, बाम्बी झोरी, कोतरी, मछलियों के साथ–साथ केकड़ा, कछुवा आदि जलीय जीव का शिकार करते हैं।**

7. सरकारी नौकरी :–

मझवार जाति के लोग अंत्यत गरीब होने के कारण बहुत कम लोग सरकारी नौकरी तक पहुंच पाये हैं। मझवार जाति में साक्षरता का प्रतिशत भी अंत्यत कम है।

8. अन्य मजदूरी :–

मझवार जाति के लोग वर्तमान समय में कृषि मजदूरी के अतिरिक्त अन्य मजदूरी का कार्य भी करते हैं, शासन के विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार विकसित किया जाता है। इन्ही शासकीय योजनाओं में मजदूरी कर अपनी आय में वृद्धि कर रहे हैं।

4.5 वार्षिक आय व्यय :–

मझवार जाति के लोग निम्नांकित साधनों से आय प्राप्त किये हैं, कृषि, मजदूरी, वनोपज, पशुधन, शिकार / मत्स्याखेट, नौकरी / सेवा व अन्य साधनों से आय प्राप्त करते हैं।

4.6 व्यय :–

मझवार जाति मुख्यतः निम्न मदों पर अपनी आय को खर्च कर जीवन यापन करते हैं।

1	भोजन
2	मकान
3	कपड़े
4	शिक्षा
5	सामाजिक व्यय– जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार
6	धार्मिक कार्य
7	आयुषन
8	चिकित्सा
9	मद्यपान
10	अन्य

4.7 कर्ज की स्थिति :–

मझवार जाति के लोग कृषि, चिकित्सा, भूमि क्रय, पशुक्रय आदि कार्यो के लिए कर्ज लेते हैं। कर्ज के रूप में मझवार परिवार धन, वस्तु, सामग्री तथा अनाज खाद आदि लेते हैं। यह कर्ज मझवार परिवार साहूकार, सहकारी संस्थाओं एवं बैंको से लेते हैं।

4.8 बाजार व्यवस्था :–

इस जाति के लोग जिन जिन ग्रामों में निवास करते हैं। वहीं 2–5 किलो के अंदर साप्ताहिक बाजार लगता है। जहां से अपनी आवश्यता की वस्तुएं खरीद लेते हैं। आज हर गांव में किराना दुकान आदि खुल जाने के कारण अधिकांश दैनिक वस्तुएं वहीं खरीद लेते हैं। सब्जी कपड़े–जूते चप्पल आदि सामग्री साप्ताहिक बाजारों से ही क्रय करते हैं, तथा ये लोग अपने वनोपज आदि वस्तुएं स्थानीय सप्ताहिक बाजार में साहूकारों के पास बेचते हैं, तथा बदले में पैसा, तेल, नमक, अनाज, कपड़ा एवं अन्य वस्तुएं खरीद लेते हैं। तेन्दुपत्ता प्राथमिक लघुवनोपज समिति तथा धान लेपस सहकारी संस्थाओं में बेचते हैं।

अध्याय – पांच
सामाजिक संरचना

मानव जीवन में सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण स्थान हैं। मानव सामाजिक प्राणी है। बिना समाज के व्यक्ति के अस्तित्व का कल्पना करना बहुत ही कठिन है। समाज में ही रहकर व्यक्ति विभिन्न प्रकार के संस्कारों में बंधा रहता है। इन संस्कारों के कारण ही इनका जीवन एक संगठित संरचना के माध्यम से ही आकार ग्रहण करता है।

समाज में ही उच्चता व न्यूनता हिनता का स्थान निर्धारित है। अर्थात कोई जाति कहां है। इसका निर्धारण पूर्व में ही निर्धारित कर दिया गया है।

5.1 जाति :–

जाति व्यवस्था प्राचीन काल से ही भारतीय सामाजिक व्यवस्था एवं संगठन का आधार है, जाति समाज का खण्डात्मक विभाजन है। जिसकी सदस्यता जन्मधारित है, तथा यह भोजन, सामाजिक सहवास, व्यवसाय एवं विवाह आदि पक्षों पर आधारित है। जाति अपने सदस्यों को एक विशेष सामाजिक प्रास्थिति प्रदान करती है। जिसमें आजीवन परिवर्तन ही किया जा सकता है। जाति एक गतिशील व्यवस्था है, तथा विभिन्न जातियों में जातिगत विशिष्ट के आधार उच्चता एवं निम्नता तथा सामाजिक दूरी पायी जाती है। मझवार समुदाय एक पृथक जाति है। जिसमें जाति संबंधी उपरोक्त विशिष्टतायें दिखाई देते है।

5.2 उपजाति :– मझवार जाति का कोई उपजाति नहीं हैं।

5.3 गोत्र का विवरण :– सामाजिक जीवन में सभी जातियों में गोत्र व्यवस्था पायी जाती है। जिसके अनुसार एक गोत्र के व्यक्ति आपस में भाई बहन माना गया है। इस कारण एक ही गोत्र में विवाह संबंध स्वीकार नहीं किया गया है। गोत्र के समस्त व्यक्ति एक काल्पनिक व्यक्ति/जीव विशेष की संतान होना मानते हैं। मझवार जाति में मुख्यतः गोत्र की जानकारी प्राप्त हुई हैं, जो निम्नानुसार हैंः–

क्र.	गोत्र	गोत्र चिन्ह (टोटम)
1	बोदेला	बेला
2	झिंगा	झिंगामछली
3	चुटिया	चूहा
4	सलार	सलार पेड़
5	कांदा	कंद
6	डांग	बांस

7	केकड़ा	केकड़ा
8	भैंसा	भैंस
9	सोनवानी	सोना
10	खोकसा	मछली (खोकसा)
11	नाग	सर्प
12	जुवाडी	नांगरजुड़ा
13	चंदन	चंदनलकड़ी
14	भेलवा	भेलवा (पेड़)
15	डुमर	डुमर पेड़
16	मोहनी	मधुमक्खी

एक गोत्र के सदस्य एक दूसरे को रक्त संबंधी मानते हैं। **यह गोत्र बहिर्विवाही समूह है।**

5.4 नातेदारी :–

मझवार जाति में नातेदारी को निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है :–

(अ) रक्त संबंधी :– इस प्रकार नातेदारी श्रेणी कें अंतर्गत ऐसे सदस्य शामिल है, जो एक दूसरे से रक्त संबंध के आधार पर संबंधित हो। जैसे – माता–पिता, पुत्र–पुत्री, दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ, भतीजा–भतीजी व भाई–बहन।

(ब) विवाह संबंधी :– इस प्रकार के नातेदारी श्रेणी के अंगर्तत विवाह द्वारा एक–दूसरे से संबंध सदस्य तथा दोनों परिवार के सदस्य शामिल है। जैसे साला–साली, सास–ससुर, नाना–नानी, मामा–मामी, समधी–समधन, मौसा–मौसी, जीजी–साला आदि।

क्र.	सम्बोधन (स्थानीय बोल में)	हिन्दी शब्दावली
1	दाउ	पिता
2	दाई आया	मां
3	दादा	दादी
4	भौजी	बड़े भाई की पत्नी
5	दीदी	बड़ी बहन
6	भाई	छोटा भाई

7	बड़ा	पिता का बड़ा भाई
8	बड़ी	बड़े पिता की पत्नी
9	काका	पिता का छोटा भाई
10	काकी	चाचा की पत्नी
11	फुफु	पिता की बहन
12	फूफा	फुफु की पति
13	मामा	माता का भाई
14	मामी	मामा का पत्नी
15	दादा	पिता के पिता
16	आजी	पिता की मां
17	मामा ससुर	पत्नी की माता का भाई
18	मामी सास	मामा ससुर की पत्नी
19	काका ससुर	पत्नी के पिता का भाई
20	काकी सास	काका ससुर की पत्नी
21	बड़ा ससुर	पत्नी के पिता के बड़े भाई
22	बड़ी सास	बड़ा ससुर की पत्नी
23	फुफु सास	पत्नी के पिता की बहन
24	फुफा ससुर	फुफु सास का पति
26	नोनी	लड़की बहन
27	बाबू	लड़का
28	सारा	पत्नी का छोटा भाई
29	डेढ़ सारा	पत्नी का बड़ा भाई
30	सारी	पत्नी की छोटी बहन
31	डेढ सास	पत्नी की बढ़ी बहन एवं पति की बड़ी बहन
32	भाटो	दीदी का पति
33	ससुर	पत्नी के पिता

34	सास	पत्नी की मां
35	जेठ	पति के बड़े भाई
36	जेठानी	पति के बड़े भाई की पत्नी
37	देवर	पति के छोटे भाई
38	देवरानी	पति के छोटे भाई की पत्नी
39	ननद	पति की छोटी बहन
40	नंदोई	ननद की पति
41	बहिन	सारा की पत्नी
42	समधी	पुत्र के ससुर
43	समधिन	पुत्र की सास
44	मौसी	मां की बहन
45	मौसा	मौसी का पति
46	भांजा	बहन का पुत्र
47	भांजी	बहन की पुत्र
48	डौका	पति
49	डौकी	पत्नी
50	नाना	माता के पिता
51	नानी	माता की माता

5.5 परिवार :—

परिवार मझवार समाज की प्रारंभिक तथा आधारभूत इकाई हैं, मुनष्य के व्यक्तित्व का विकास सामाजिकरण एवं सांस्कृति परिवार से ही प्रारंभ होता है। परिवार में दो या अधिक पीढ़ियों के सदस्य निवास करते है। **मझवार जाति के वरिष्ठ पुरूष परिवार के मुखिया होते हैं।** परिवारिक जीवन का संचालन, निर्णय मुखिया द्वारा किया जाता है। मझवार जाति में एकल एवं केन्द्रीय व संयुक्त परिवार पाये जाते हैं। संयुक्त परिवार युवा सदस्यों के विवाह पश्चात एकल तथा विस्तृत परिवार मे विघटित हो जाता है।

5.5.1 परिवार के सदस्यों का संबंध :–

मझवार परिवार में विभिन्न सदस्य आपसी सामंजस्य तथा ताल मेल के साथ रहते हैं।

(A) माता–पिता :– बच्चें के जन्म को परिवार की पूर्णतः माना जाता है। बच्चें के जन्म के पश्चात माता–पिता बच्चें की देख–भाल, पालन–पोषण दैनिक तथा जीवन के प्रत्येक पक्षों का प्रशिक्षण देते हैं। बाल्यावस्था में माता–पिता संतान को परिवार एवं समाज के अनुरूप विकसित करते हैं। बच्चों के विवाह योग्य होने पर उनका विवाह करते हैं, तथा बच्चों को गृहस्थ जीवन में प्रवेश कराने के उपरान्त माता–पिता अपने कर्तव्य की पूर्ति मानते हैं।

(B) पति–पन्ती :– मझवार जाति में पति–पत्नी का संबंध मधुर प्रेम युक्त तथा दावित्वपूर्ण होता है। पति–पत्नी एक–दूसरे के प्रति दायित्वों का निर्वाहन, जिम्मेदारी के साथ करते हैं। पति परिवार के आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। तो पत्नी परिवारर के दैनिक कार्य साफ–सफाई बच्चों की देख–भाल भोजन बनाने के साथ–साथ कृषि व ईधन संकलन आदि कार्यो में सहयोग कर परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में मदद करती है।

(C) पिता–पुत्री :– पिता–पुत्री का संबंध वात्सवयपूर्ण होता है। पिता–पुत्री के प्रति पुत्र की अपेक्षा अधिक स्नेह भाव रखता है। पिता किशोरावस्था से ही उसे भावीजीवन की शिक्षा देता है। विवाह के पश्चात नये परिवार के सदस्यों से सामांजस्य बनाने की सीख देता है। पुत्री के विवाह योग्य होने पर योग्य वर से उसका विवाह कर पुत्री के सुखी जीवन की कामना करता है। पुत्री माता की अपेक्षा पिता से अधिक स्नेह भाव व आत्मीयता रखती हैं, तथा पिता की सेवा करती है।

(D) माता–पुत्र :– माता पुत्र का संबंध आत्मीयता तथा वात्सल्य से परिपूर्ण होता है। माता का पुत्री की अपेक्षा पुत्र से भावनात्मक लगाव अधिक होता है। माता–पुत्र का पालन–पोषण देखभाल पूर्ण मनोयाग से करती है। माता–पुत्र को समाज परिवार क नियम परम्पराओं की शिक्षा देती है। पुत्र माता की आज्ञा का पालन करता है।

(E) माता–पुत्री :– माता पुत्री का संबंध वात्सल्य पूर्ण होता है। माता–पुत्री को वाल्यावस्था से ही घरेलू कार्य सामाजिक संस्कार व आर्थिक कार्य सिखाती है। माता–पुत्री को पराया धन मानकर ससुराल के नये परिवेश में सफलतापूर्वक सामांजस्य बनाने व सुखी जीवन हेतु शिक्षित करती हैं।

(F) भाई–भाई :– भाई–भाई के मध्य संबंध प्रेमपूर्ण तथा मित्रवत होता है। छोटा भाई बड़े भाई का आदर व सम्मान करता है, तथा बड़ा भाई छोटे भाई के प्रति स्नेह भाव रखता है। पारिवारिक सामाजिक तथा आर्थिक कार्यो का निर्वाहन साथ–साथ करते है। विवाहोपरांत

अलग होने पर भी भाईयों में स्नेह बना रहता है। कुछ परिवारों में विवाहोपरांत परिवारिक ताल–मेल न होने एवं सम्पत्ति विवाद के कारण तनाव भी रखता है।

(G) **बहन–बहन** :– बहन–बहन का संबंध प्रेम पूर्ण होता है। बड़ी बहन छोटी बहन को घरेलू कार्य सिखती हैं, तथा छोटी बहन तथा बड़ी बहन के कार्यो में सहयोग करती है। बड़े होने पर विवाह के उपरांत भी बहनों मे स्नेह भाव बना रहता है।

(H) **सास–बहु** :– सास–बहु का संबंध आदर सम्मान कर्तव्य तथा अपेक्षा पर आधारित है। सास अपनी बहु से आदर–सम्मान परिवारिक कर्तव्यों एवं जिम्मेदारी के बखूबी निर्वाहन की अपेक्षा रखती है। सास–बहु आपसी ताल मेल अच्छा रहने पर परिवारिक जीवन अच्छा व संतुलित रहता है। कई परिवारों में सास–बहु एक दूसरे की अपेक्षाओं की पूर्ति न करने के कारण आपसी संबंध में परिहास संबंध में आते हैं। बहु ससुर का पिता तुल्य आदर–सम्मान करती है।

(I) **देवर–भाभी** :– देवर भाभी का संबंध परिहास संबंध की श्रेणी के अंतर्गत है। भाभी देवर के संबंध स्नेह तथा नित्रवत होते हैं।

(J) **ननद–भाभी** :– ननद भाभी का संबंध स्नेहपूर्ण होता है। दोनों एक दूसरे की आवश्यकता एवं अपेक्षाएं की पूर्ति का प्रयास करते हैं। ननद के विवाह के पश्चात ननद भाभी का संबंध मधुर हो जाते हैं। कई परिवारों में ननद भाभी मध्य सामंजस्य ठीक न होने की स्थिति में परिवारिक वातावरण तनावपूर्ण हो जाता है।

5.6 अंर्तजातीय संबंध :–

मझवार जाति के निवास क्षेत्र में गोंड़, पनिका, डिहारी कोरवा, पहाड़ी कोरवा, घासी, अहीर (यादव), लोहार, अगरिया, बनियां, तेली, उरांव, कंवर, नगेशिया जाति एवं जनजातियां निवासरत है। एक क्षेत्र में एक साथ निवास करने के कारण इन जातियों में पारस्परिक व औपचारिक संबंध पाये जाते हैं। इस कारण ये आयु व लिंग के आधार पर एक दूसरे का सम्मानपूर्वक नातेदारी शब्द सम्बोधित करते हैं। इन जातियों में जातिगत कार्यो के आधार पर भी पारस्परिक निर्भरता पाया जाता है। मझवार जाति दैनिक जीवन में मिट्टी के बर्तन हेतु कुम्हार, लौह कार्य हेतु लोहार व पशुपालन हेतु अहीर (यादव) आदि जातियों की सेवा लेते हैं। मझवार कृषि मजदूरी के रूप में अन्य जातियों के यहां कार्य करते हैं। इस प्रकार मझवार ग्रामों मे ंविभिन्न जाति जनजातियों में प्रत्यक्ष पारस्परिक संबंध पाये जाते हैं। तथा एक साथ पीढ़ी–पीढ़ी निवास करने के कारण आपसी सामांजस्य तथा शब्दभाव पाया जाता है। इसके साथ–साथ मझवार निवासित ग्रामों में जन्म व खान–पान तथा कार्य के आधार पर जातियों में सामाजिक स्तरीय करण पाया जाता है।

5.7 आसपास के अन्य जातियों के उच्चजात क्रम में इस जाति का स्थान :–

मझवार जाति में ऊंच नीच का भाव पाया जाता है।

(अ) उच्च जाति :– निम्न जातियों को अपने से उच्च मानते हैं :–

1. ब्राम्हण
2. क्षत्रिय
3. बनिया
4. अहीर (यादव)

(टीप :– इन जातियों के यहां का पक्का व कच्चा भोजन ग्रहण करते हैं।)

(ब) समकक्ष जाति :– निम्न जातियों को ये अपने समकक्ष मानते हैं :–

1. कंवर
2. गोड़
3. माझी
4. बरगाह
5. रजवार

(टीप :– इन जातियों के यहां पक्का व कच्चा भोजन ग्रहण करते हैं।)

(स) निम्न जाति :– मझवार निम्न जातियों को अपने से छोटे मानते हैं।

1. उरांव
2. पण्डो
3. कोरवा
4. बिरहोर
5. पनिका

(टीप :– इन जातियों के यहां पक्का व कच्चा भोजन ग्रहण नहीं करते हैं।)

5.8 अन्य जातियों से खान–पान संबंधी :–

मझवार जाति के लोग सभी जातियों के यहां खान पान करते हैं, तथा मझवार जाति के यहां कंवर, गोंड़, माझी, बरगहा एवं रजवार का संबंध पाया जाता है। अन्य जाति जैसे उरांव, पण्डों, कोरवा, बिरहोर एवं पनिका जाति के लोगों से खान–पान का संबंध नहीं है।

अध्याय – छः
जीवन चक्र के संस्कार

विश्व के सभी समाजों में नवजात शिशु के जन्म, विवाह एवं परिवार के सदस्यों की मृत्यु होने पर एक पूर्व निश्चित नियम के अंतर्गत कुछ अनुष्ठानों को पूर्ण करना पड़ता है। यद्यपि परिवारों को सामाजिक–आर्थिक स्थिति में भिन्नता के फलस्वरूप आयोजन के स्वरूप में विविधता दिखाई देती हैं, किन्तु समाज के कुछ मूलभूत नियमों का पालन अवश्य किया जाता है। इन्हें ही जीवन संस्कार के नाम से जाना जाता है। ये जीवन संस्कार, जन्म, विवाह एवं मृत्यु से जुड़े होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में इन संस्कारों से संस्कार बद्ध होना पड़ता है। छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा संभाग में निवासरत मझवार जाति भी इन जीवन संस्कार को करते हैं।

6.1 जन्म संस्कार :–

6.1.1 गर्भधारण :– मझवार जाति में स्त्री के मासिक धर्म चक्र रूकने से गर्भधारण या गर्भ के ठहरने का ज्ञान होता है। गर्भावस्था के कारण गर्भवती स्त्री मध्यकाल तक सामान्य दैनिक कार्यो का निर्वहन करती है। इस काल में गर्भवती स्त्री को सामान्य से अच्छा पौष्टिक भोजन दिया जाता है, ताकि प्रसव के समय जच्चा–बच्चा स्वस्थ रहें।

6.1.2 प्रसव :– मझवार जाति में गर्भवती स्त्री की प्रसव पीड़ा होने पर प्रसव घर में ही एक कमरे में गांव के ही प्रसव कार्य में दक्ष या जानकार (कुराईन) महिला के द्वारा किया जाता है। बच्चे के प्रसव के बाद नाल काटने के लिए पूर्व में छुरी का प्रयोग किया जाता था, किन्तु वर्तमान में नये ब्लेड का प्रयोग किया जाता है। नाल काटने के बाद नाल को कमरे के अंदर गड्डा खोदकर गाड़ दिया जाता है। अब समाज में थोड़ा जागरूकता आने के कारण प्रसव प्राय : अस्पतालों में होने लगा है।

6.1.3 छट्ठी संस्कार :– शिशु के जन्म के एक सप्ताह बाद नवजात शिशु की नाल झड़ने पर छट्ठी का कार्यक्रम किया जाता है। इस दिन गांव के सामाजिक जनों एवं नाई, धोबी तथा कुराईन को घर में बुलाया जाता है। नाई नवजात शिशु का मुण्डन एवं घर एवं सामाजिकजनों की हजामत (दाड़ी–मुंछ–नाखून) बनाता है। धोबी प्रसूता स्त्री के कपड़े के साथ–साथ परिवार जनों के ओड़ने–बिछाने के कपड़े की सफाई का कार्य करता है, एवं कुराईन (दाई) प्रसूता के कमरे की साफ–सफाई व नवजात

शिशु को नहलाने तथा बच्चे की सेकाई का कार्य करती है। इस दिन प्रसूता महिला को जंगली औषधियों जैसेः– कसवानी खाल, खम्हार, महुवाबकला, तीनपाना, परसाबकला, कलगीकांदा, डिंडोरी कांदा, खड़ा कुलथी, 1/2 किलो महुआ को हंड्डी में रखकर आग में उबालकर सुबह के समय प्रसूता को पिलाते हैं तथा मड़िया (चांवल) की रोटी दिया जाता है। जिससे प्रसव के समय में शरीर में आई कमजोरियों को दूर किया जा सके, वर्तमान में चिकित्सा सुविधा का विस्तार होने के कारण अंग्रेजी दवाईयों का उपयोग किया जाता है। छट्ठी संस्कार के बाद प्रसूता घर के रसोई एवं अन्य कार्य में हाथ बंटा सकती है, छट्ठी संस्कार के बाद घर पवित्र हो जाता है। उसके पहले तक घर को अपवित्र समझा जाता है।

6.1.4 **नामकरण** :– शिशु का नामकरण जन्म के लगभग पुत्र होने पर 6 माह बाद एवं पुत्री होने पर 5 माह बाद अन्नप्रासन के समय करते है। इस दिन सगे संबंधियों को घर बुलाया जाता है। घर में इस दिन दालभात, खिचड़ी, खीर, छोला–पुड़ी बनाया जाता है। नवजात शिशु को इस दिन दोना पत्तल में रखकर अन्न खिलाया जाता है, और नवजात शिशु के नानी–नाना के द्वारा नामकरण किया जाता है तथा बच्चे को उपहार स्वरूप वस्तु एवं नगद भेंट कर लम्बी उम्र के लिए आर्शीवाद प्रदान किया जाता है। तत्पश्चात सभी लोगों को खाना खिलाया जाता है।

6.1.5 **पूनर्जन्म** :– मझवार जाति पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। परिवार में किसी बच्चें का जन्म होने पर उसकी किसी पितर या पूर्वज का पुनर्जन्म है, या नहीं गुनिया या वैद्य से दिखाया जाता है।

6.2 विवाह संस्कार :–

मझवार समाज में विवाह को जीवन का आवश्यक संस्कार माना जाता है। क्योकि विवाह से ही व्यक्ति के जीवन में स्थिरता निश्चितंता आती है। साथ ही परिवार के निर्माण से समाज व सांस्कृतिक निरन्तरता गतिशील रहती हैं।

6.2.1 **विवाह हेतु अधिमान्यता** :– मझवार समाज में विवाह हेतु ममेरे–फुफेरे विवाह को अधिमान्यता प्राप्त है। इसके लिए एक व्यक्ति अपने पुत्र या पुत्री के विवाह हेतु उनके मामा या फुफा के परिवार को प्राथमिकता देता है। अर्थात अपने संतान के विवाह हेतु एक व्यक्ति अपने ससुराल/साला का परिवार या बहनोई के परिवार को प्राथमिकता देता है। **इस प्रकार के विवाह को दूधा विवाह कहते है।** ऐसे विवाह को समाज के द्वारा अच्छा माना जाता है। क्योंकि वैवाहिक पक्ष तथा वर पक्ष पूर्ण परिचित या रिश्तेदार होते हैं। जिसे संतान का वैवाहिक जीवन सुखी होने का विश्वास होता है, तथा दोनों पक्षों में आपसी परिवारिक संबंध भी घनिष्ठ होते हैं।

6.2.2 विवाह आयु :— वर्तमान में मझवार समाज में लड़कों का विवाह 21 वर्ष एवं लड़कियों का विवाह 18 वर्ष की आयु में किया जाता है। पूर्व में मझवार समाज में बाल विवाह की प्रथा भी प्रचलित थी।

6.2.3 वधु मुल्य प्रथा :— मझवार समाज में वर पक्ष की ओर से वधु के पिता को अनाज, दाल गुड़ तेल मंद वधु के कपड़े 100 रूपये नगदी सुक भरना के रूप में दिया जाता है।

6.2.4 सामान्य विवाह :— मझवार जाति समुदाय में सामान्य विवाह प्रथा प्रचलित है। अन्य विवाह में विधवा विवाह, उढ़हिया, ढुकू विवाह, चूड़ी विवाह आदि विवाह की पद्धतियां प्रचलित है। सामान्य विवाह जाति समाज के जाति पंचायत के प्रमुख द्वारा जो विवाह कराया जाता है। उसे सामान्य विवाह कहा जाता है। विवाह योग्य होने पर लड़का पक्ष वाला अपने संबंधियों व रिश्तेदारों व परिचितों को अवगत कराता है कि उसका लड़का विवाह योग्य हो गया है, व उसका विवाह इसी वर्ष कराना हैं परिचितों व रिश्तेदारों द्वारा इनके बताये अनुसार लड़की पता करते हैं व लड़का के पिता को सूचित करते है कि अमुक व्यक्ति के यहां शादी करने योग्य लड़की है। आप लोग चाहे तो आकर देख लें। लड़का पक्ष वाले तीन चार लोग जो उनके करीबी रिश्तेदार जैसे दादा, चाचा, मामा या फूफा या जो करीबी है को लेकर जाते हैं लड़की पक्ष को सूचित कर दिया जाता है कि लड़का पक्ष वाले लड़की देखने के लिए आ रहे है। लड़का पक्ष वाले का पहुचने पर स्वागत सत्कार किया जाता है। चाय पानी पिलाया जाता है, तथा आने का प्रयोजन पुछा जाता है। लकड़ा पक्ष वाले बताते हैं कि हम लोग आपके लकड़ी को अपने लड़का के लिए देखने आयें हैं, तत्पश्चात लड़की के माता—पिता अपने लड़की को लड़का पक्ष को दिखाते हैं। लड़की पसंद आने पर एक दो दिन बाद अपने लड़का को साथ ले कर आते है, तथा लड़की लड़का एक दूसरे को पसंद होने पर पर रिश्ता पक्का समझा जाता है।

6.2.5 तिहारी (सगाई) :— लड़का लड़की एक दूसरे को पंसद एवं माता पिता भी शादी के लिए तैयार होने पर एक सप्ताह बाद तिहारी (सगाई) का कार्यक्रम किया जाता हैं। इस कार्यक्रम में लड़का पक्ष वाले पांच छः सदस्य अपने साथ रोटी, साड़ी, चुड़ी आईना आदि समान लेकर लड़की के यहां जाते हैं। इस दिन लड़की पक्ष वाले अपने घनिष्ठ रिश्तेदारों एवं गांव के सामाजिकजनों को अपने घर बुलाते हैं। गांव जाति समाज के प्रमुख व्यक्ति के द्वारा देवी—देवता का पूजा कर सभी सामाग्रियों को लड़की को भेंट करते हैं, तथा उपस्थित सामाजिक जनों को प्रसाद वितरण किया जाता है, तथा इसी दिन शादी के दिन तारीख तय किया जाता है।

6.2.6 विवाह :– मझवार जाति में प्रायः 3 दिन में शादी की रस्म पूरा कर लिया जाता है। पूर्व में 5 दिन व 7 दिन का विवाह किया जाता था, शादी की खर्च एवं समय की बचत करने के लिए तीन दिन में विवाह किया जाता है।

(अ) पहला दिन :– मझवार जाति में शादी हेतु पहले दिन मंडप तैयार किया जाता है। इसके लिए घर की आंगन में तीन–तीन के क्रम में नौ खम्बा गड़ा जाता है तथा उसके उपर दो तीन फीट के अतंराल में बांस या सरई की बल्ली डाल दिया जाता है, एव छाव करने के लिए के लिए उपर से डुमर या जामून पेड़ की टहनियों को डाल दिया जाता है। मंडप के केन्द्र में सीधा पेड़ का मड़वा बनाया जाता हैं। मड़वा के नीचे हिस्से में चबुतरा बनाया जाता है, जिसमें कलश रखकर दीपक जलाया जाता है। शाम के समय दुल्हा को सरसों का तेल, गुड़, तिली खिलाया जाता है। कुंवारे लड़कियों के द्वारा दुल्हा–दुल्ही को हल्दी लेपन किया जाता है, एवं रात्रि के समय में नाचते गाते है।

(ब) दूसरा दिन :– मझवार जाति में शादी के दूसरे दिन भी दुल्हा एवं दुल्हन के उपर तेल चढ़ाया जाता है, इस दिन पांच तेल चढ़ाया जाता है, एवं नाचने गाने का कार्यक्रम रहता है।

(स) तीसरा दिन :– विवाह के तीसरे दिन सुबह के समय तेल हल्दी उतारते है, व दुल्हा का नहलाया जाता है, तथा बारात प्रस्थान करने हेतु तैयार किया जाता है, मझवार समाज में प्रायः वर को धोती पैजामा पेंट तथा सिर पर कागज का बना मौर पहनाया जाता है, दुल्हा अपने हाथ में तीर और बेनवा (बांस शिल्प) लेकर, बाजा गाजा के साथ बारात निकालते हैं, तथा दुल्हा का जीजा (डेडहा) मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। बारात पहुँचने पर वधु को भी सुहासीन (कुवांरी लड़की) के द्वारा नहलाया एवं तैयार किया जाता है, ताकि बारात घर पहुंचने पर कार्यक्रम तय समय पर हो सके। बारात आने की पता चलने पर बारात का स्वागत सत्कार किया जाता है। तय लगन के समय वर वधु को मडवा के नीचे एक साथ बिढ़ाया जाता है। लड़की के माता पिता वर वधू की पैर को पानी एवं दूध से धोते है व पीते है। गांव का समाज प्रमुख चांवल या जौ आटा से चौका पुरता है तथा उसके उपर आम लकड़ी की धुनी जलाया जाता है, नारियल, अगरबत्ती, सुपारी आदि पूजन सामग्रियों से पूजा किया जाता है। पूजा सम्पन्न के बाद लड़की के मांग में वर के द्वारा 1 बार सेंदुर भरा जाता है, और लड़की के भैया–भाभी, वर–वधू को मड़वा का पांच या सात बार फेरा

लगवाते हैं। फेरा पूरा होने के बाद वर—वधू को मंडप के नीचे धरम टिकावन के लिए बिठा दिया जाता है। शादी कार्यक्रम में आये रिश्तेदारों एवं सामाजिक जनों के द्वारा नव वर—वधू को आर्शीवाद प्रदान कर वस्तु एवं नगद उपहार स्वरूप भेंट करते है। धरम टिकावन का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद सभी रिश्तेदारों एवं सामाजिकजनों को भोजन खिलाया जाता है। तत्पश्चात बारात को बिदा कर दिया।

6.3 मृत्यु संस्कार :—

मझवार जाति में मृत्यु को जीवन की पूर्णता एवं नियति माना जाता है, परिवार में किसी व्यक्ति के मृत्यु होने पर स्त्रियां विलाप करती है। जिसे सुनकर पड़ोसी एकत्रित और सभी को सूचना देते हैं। संबंधियों एवं ग्रामीणों के एकत्रित होने के पश्चात शव को शमशान तक ले जाने के लिए बांस का चाई बनाया जाता है मृत शरीर को सबसे पहले नहलाने एवं धोने के बाद तेल लगातें हैं। परिवारिक एवं रिश्तेदारों के द्वारा कपन ओढ़ाते हैं एवं शव के पास सुपा या टुकना में मुर्रा चिवड़ा, धान, पैसा आदि रखते हैं फिर मृत शरीर को बांस की चाई के उपर रखा जाता है। चाई को मृतक के बच्चों के द्वारा कंधा दिया जाता है, एवं शव के उपर मुर्रा चिवड़ा, धान, पैसा आदि को सिचतें हुए राम नाम सत्य है। कहते हुए शमशान घाट ले जाते हैं। मझवार जाति में शव को दफनाने की प्रथा है, शमशान घाट में उत्तर दक्षिण दिशा में पांच छः फीट गड्डा खोदा जाता है। गड्डा खोदने का काम जाति समाज वाले मिलकर करते हैं, मृतक का बड़ा लड़का नदी या तालाब में स्नान कर घड़ा में पानी लाता है, एवं पानी से मृतक के मुंह को धोते हैं और उसके बाद गंगा जल या तुलसी पत्ती खिलाया जाता है। उसके बाद मृतक के बच्चों द्वारा शव को गड्डा के पांच चक्कर धुमाने के बाद शव को गड्डा में धीरे—धीरे नीचे रखते हैं, तत्पश्चात मृतक यदि पिता हो तो सबसे पहले मिट्टी देने का अधिकार सबसे बड़े पुत्र को होता है, एवं यदि मृतक माता हो तो छोटे पुत्र को मिट्टी देने का अधिकार होता है। उसके बाद परिवार के अन्य सदस्य व शव यात्रा में शामिल अन्य व्यक्तियों को होता है। मिट्टी देने का कार्य हो जाने पर शव यात्रा में शामिल सभी व्यक्ति नदी या तालाब में स्नान करते हैं, और अपने अपने घर चले जाते हैं।

6.3.1 तीजवा :— मझवार जाति में मृत्यु के तीसरा दिन तीजवा का कार्यक्रय किया जाता है। इस दिन नाई, धोबी एवं सामाजिक जनों एवं रिश्तेदारों को घर बुलाया जाता है, नाई मृत परिवार के सभी पुरूष सदस्यों का मुण्डन एवं अन्य सामाजिकजनों एवं रिश्तेदारों ढ़ाढी मुंछ बनाने का कार्य करता है। उसके बाद तीजवा कार्यक्रम में शामिल सभी व्यक्ति तालाब या नदी में स्नान करने जाते हैं।

स्नान करने के बाद सभी सदस्य मृतक घर आते हैं और मृत शरीर की आत्मा की शांति हेतु भगवान से प्रार्थाना कर श्रंद्धाजंलि देते हैं।

6.3.2 **दसवा** :– मझवार जाति में मृत्यु के दसवें दिन दसवा का कार्यक्रम किया जाता है। इस दिन मृतक के सभी रिश्तेदारों सामाजिकजनों को घर बुलाते हैं। नाई मृतक परिवार के सभी पुरूष सदस्यों का मुण्डन व ढाढ़ी मुंछ तथा अन्य रिश्तेदारों व सामाजिकजनों का ढाढ़ी मुंछ बनाता है। उसके बाद नदी या तालाब में सभी व्यक्ति स्नान करने के लिए जाते हैं। सभी सदस्य स्नान करने के पश्चात तालाब के एक किनारें में जुड़ दातुन को जमीन में गाड़ दिया जाता है। उसके उपर सभी सदस्य पांच पांच बार अपने दोनों हाथों से पानी डालकर मृत शरीर की आत्मा की शांति हेतु प्रार्थाना करते हैं। तत्पश्चात सभी सदस्यों मृतक के घर आते हैं। शाम के समय मृतक भोज खिलाया जाता है।

6.3.3 **चंदनपान** :– दसवा के दूसरे दिन सुबह–सुबह मझवार जाति में चंदनपान (पगड़ीरस्म) का कार्यक्रम किया जाता है। इस दिन घर के आंगन में चौंक फुर कर कलश में दीपक जलाया जाता है, एवं मृत परिवार के सभी सदस्यों को बिठा कर उसके माथे पर हल्दी चंदन को मिलाकर लगाया जाता है। पुरूष सदस्यों के सिर पर रिश्तेदारों एवं सामाजिकजनों के द्वारा नया कपड़ा, गमछा, धोती, लुंगी आदि बांध कर खुशी–खुशी जीवन बिताने का आर्शीवाद प्रदान करते हैं। चंदनपान कार्यक्रम पश्चात कलश को घर के अंदर रख दिया जाता है, और एकादशी के दिन मृतक के आत्मा की प्रतीक ज्योति कलश का मुर्गी, बकरा–बकरी, सुपारी, नारियल, आगरबत्ती, घी, धूप आदि से पूजा पाठ करते हैं।

अध्याय – सात
राजनैतिक संगठन

मझवार जाति की राजनैतिक व्यवस्था परम्परगत रीति रिवाजों एवं प्रथाओं तथा आधुनिक पंचायत पर आधारित है। मझवार जाति में ग्रामीण जातीय पंचायत की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसी पंचायत से ग्राम के जातियगत एवं सामाजिक मामलों का निपटारा किया जाता है। इससे ग्राम से एकता एवं अनुशासन बना रहता है।

7.1 जाति पंचायत :– मझवार ग्राम स्तर पर ग्राम स्तरीय जाति पंचायत होता है। इसमें ग्राम या अंतर ग्राम के छोटे–छोटे जातिगत एवं सामाजिक मामलों का निपटारा किया जाता है, एवं मझवार जाति निवासरत जिलों में जिला स्तर पर जिला स्तरीय जाति पंचायत होता है। जो ग्राम स्तरीय जाति पंचायत के अपीलीय प्रकरण की सुनवाई एवं समाज को संगठित करने का कार्य करता है, तथा राज्य स्तर पर राज्य मझवार जाति पंचायत होती है। जो जिला स्तीय जाति पंचायत के अपीलीय प्रकरण की सुनवाई करता है।

7.2 कार्यकारिणी :– मझवार ग्राम स्तरीय जाति पंचायत का मुखिया (गौटिया) ग्राम का प्रमुख व्यक्ति होता है, तथा अन्य अनुभवी व योग्य व्यक्ति इसके सलाहकार सदस्य होते हैं, ये सभी मिलकर जातिगत एवं सामाजिक मामलो का निराकरण करते हैं। सलाहकार सदस्य अनुभवी एवं जानकार व्यक्तियों का चयन जाति समाज के लोगों के द्वारा सर्व सहमति से किया जाता है, तथा जिला जाति स्तरीय कार्यकारणी में एक–एक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्याक्ष, सचिव एवं अन्य सलाहाकार सदस्य होते है। जिनका चयन ग्राम स्तरीय जाति पंचायत के मुखियाओं के द्वारा सर्व सहमति से किया जाता है, एवं राज्य स्तरीय जाति पंचायत कार्यकारणी एक–एक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्याक्ष, सचिव एवं अन्य सलाहाकार सदस्य होते हैं, जिनका चयन जिला स्तरीय कार्यकारणी के द्वारा सर्व सहमति से किया जाता है।

7.3 न्याय :— मझवार ग्राम स्तरीय जाति पंचायत में न्यायिक प्रक्रिया इस प्रकार हैं :—

(अ) अपराध की सूचना एवं निर्णय :— अपराध घटित होने के पश्चात पीड़ित व्यक्ति मुखिया या सलाहकार के किसी सदस्य को सूचित करता है। इसके पश्चात मुखिया व सलाहकार के सदस्य सुनवाई की तिथि स्थान नियत कर सभी सदस्यों को सूचित करते हैं। सुनवाई स्थल सार्वजनिक भवन गुडीघर, पीड़ित पक्ष के घर सुनवाई किया जाता है। सुनवाई व न्याय नियत तिथि को तय स्थान पर सभी के उपस्थित होने पर सुनवाई होती है। मुखिया की उपस्थिति में पंचों में से एक दोनों पक्ष को धरती माता एवं पुरखा की शपथ दिलाकर सुनवाई प्रारंभ करता है। दोनों को अपना—अपना पक्ष रखने का अवसर दिया जाता है। प्रमाण एवं गवाहों का परीक्षण किया जाता है। इसके पश्चात मुखिया व पंच आपस में सलाहकर निर्णय करते हैं। निर्णय मुखिया द्वारा घोषित किया जाता है। दोषी को जुर्माना, चेतावनी, भोज, सामाजिक बहिस्कार का दण्ड दिया जाता है। सुनवाई हेतु दोनों पक्ष से खर्चा लिया जाता है। जिसे **चोंगी, माखुर** कहते हैं। दोषी व्यक्ति को प्राप्त सजा का पालन तुरंत करना पड़ता है। जुर्माने के रूप में प्राप्त राशि से भोज कर दोनों पक्ष को चेतावनी के साथ जोहार बढौनी (एक दूसरे का हाथ मिलाकर गले लगाना) कराते हैं। इसके पश्चात लोटा काटना कार्यवाही समाप्त हो जाता है, एवं दण्ड न चुकाने पर जात काटना (जाति से बहिष्कार) कर दिया जाता है। निर्णय के विरूद्ध जिला स्तरीय जाति पंचायत, राज्य स्तरीय जाति पंचायत में अपील किया जा सकता है, एवं जिला स्तरीय जाति पंचायत के विरूद्ध राज्य स्तरीय जाति पंचायत में अपील किया जा सकता है। किन्तु सामाजिक दबाव के कारण नहीं करते है। मझवार जाति सरगुजा कोरवा, जशपुर, रायगढ़ जिले में हैं. इन चारों जिला का राज्य स्तरीय जाति पंचायत है।

7.4 अधिकार और कर्तव्य :— जाति पंचायत जाति के अंतर्गत गलत कार्य करने वाले को आर्थिक व सामाजिक दण्ड दे सकती है। दुख—सुख में एक दूसरे का सहयोग ही इस जाति पंचायत का कर्तव्य है।

7.5 गांव पंचायत :— गांव पंचायत का गठन गांव के लोग अपने स्तर पर करते हैं। गांव पंचायत के सदस्य सभी जाति के समाज के लोग होते हैं। प्रायः गावं को अनुशासित बनाये रखने एवं छोटे—मोटे लड़ाई झगड़ों का निराकरण इस पंचायत के द्वारा किया जाता है, तथा गांव में स्वच्छ वातावरण हमेशा बना रहें।

7.6 आधुनिक ग्राम पंचायत :– आधुनिक ग्राम पंचायत का गठन पंचायती राज अधिनियम के अंतर्गत गांव को अनेक वार्डो में विभक्त कर वार्ड पंच एवं एक सरपंच का निर्वाचन शासकीय विधि से मत–पत्र के द्वारा किया जाता है। इस पंचायत के सदस्य बनने के लिए शासन द्वारा निर्धारित सभी शर्तो को पूरा करना पड़ता है। इस पंचायत द्वारा ग्रामीण स्तर के शासन के द्वारा बनाये गये योजनाओं का क्रियावन्यन किया जाता है। तथा शासन के द्वारा ग्राम विकास के लिए पंचायतों को कई प्रकार की शक्तियों प्रदान की गई हैं, ताकि गांवों का विकास हो सके। मझवार जाति के लोगों में राजनैतिक जागृति का अभाव होने के कारण अभी त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में अपनी सहभागिता नहीं दे पाये हैं,

7.7 नेतृत्व (लीडरशिप) :– मझवार जाति में समाज का नेतृत्व ग्राम प्रमुख के द्वारा किया जाता हैं, जो समाज के सभी सदस्यों को मान्य होता है। मझवार जाति के लोग अभी तक, जनपद सदस्य, जिला पंचायत सदस्य, विधायक व सांसद के पद पर पहुंच नहीं पाये हैं।

अध्याय – आठ
धार्मिक जीवन

मझवार जाति के लोग प्राचीन समय से देवी देवता मानते आ रहे हैं। ये लोग जादू–टोना/ झाड फूंक में विश्वास करते हैं। मझवार लोगों के धार्मिक जीवन में देवी देवता का विशेष महत्व है। इस जाति के लोग प्रकृति के कापी निकट रहते हैं, शिक्षा का अभाव है। आर्थिक समस्याओं से ग्रसत भी हैं। इस कारण अलौकिक शक्ति पर काफी विश्वास करते हैं। यदि कोई समस्या आ जाती है या नुकसान हो जाता है तो ऐसा मानते हैं कि किसी अलौकिक शक्ति की नाराजगी से यह हानि हुई है। इनके धार्मिक जीवन को देखने से स्पष्ट होता है। कि अलौकिक शक्ति दो प्रकार की होते है। लाभकारक एवं हानिकारक लाभकरण अलौकिक शक्ति की श्रेणी में देवी–देवता आते हैं, जबकि हानिकारण की श्रेणी में भूत–प्रेत, चुडेड इत्यादि आते हैं। इस जातियों के लोगों द्वारा पूजे जाने वाले प्रमुख देवी–देवता इस प्रकार है।

8.1 देवी–देवता :– मझवार जाति में प्रत्येक गोत्र का अपना अपना अलग देवता है। जिसकी वे अपने घर में स्थापना किये रहते हैं। जब कभी इनके घर का कोई सदस्य बीमार पड़ता है या अन्य किसी प्रकार का संकट इनके परिवार में आ जाता है तब ये अपने कुल देवता के पास कुछ अनाज या बर्तन जैसे कांसे की थाली या पितल की गंज इत्यादि यह कहकर रखते हैं कि देवता हमें इस दुखः से बचाओं, दुखः ठीक होने पर मैं आपको अमुख–अमुख वस्तु चढाउंगा तथा बलि दूंगा। उसके लिए मैं यह अपनी अमुख वस्तु आपके पास रहन रखता हूं। और उसे उस समय तक वहां से नहीं हटाते जब तक आपकी बोली हुई वस्तु देवता को अर्पित नहीं कर देते। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष दवेउठन (एकादशी) के उपलक्ष्य में सभी घर की देवी–देवता की पूजा परिवार के मुखिया के द्वारा किया जाता है। मझवार जाति के कुछ गोत्रो के देवी देवता इस प्रकार हैः–

1. चुटिया गोत्र की देवी देवता :–

(अ) पितृ पूजा या पितर देव (घर के अंदर)

(ब) दुल्हादेव

(स) अंधयारी

2. सोनवानी गोत्र की देवी–देवता :–

(1) पितृ पूजा या पितर देव

(2) हिंगलाज माता

(3) बुढ़ी मैया

(4) छिंदतईया,

(5) बधोरीपाढ

(6) शिव सेबरिया (पशुघर में)

3. केकड़ा गोत्र के देवी–देवता :–

(1) दुल्हादेव

(2) पितृ पूजा या पितरदेव

4. कांदा गोत्र के देवी–देवता :–

(1) दुल्हादेव

(2) अंधयारी

(3) धनकसरी

(4) दुधगोईया (पशुशाला में)

5. नाग गोत्र के देवी–देवता :–

(1) दुल्हादेव

(2) अंधयारी

(3) महादेव

(प्रत्येक त्यौहारों जैसे– नवाखाई, देवउढन, हरेली आदि अवसरों में बकरा, बकरी, मुर्गी आदि की बलि चढ़ाकर एवं शराब आदि का तर्पण कर पूजा किया जाता है।)

8.1.1 ग्रामीण देवी–देवता :– ग्रामीण देवी–देवताओं की पूजा बैगा सार्वजनिक कल्याण के लिए करता है। मझवार निवासरत ग्रामों के ग्रामीण देवी–देवता जिनको मझवार जाति के लोग मानते हैं निम्न है :–

(1) महादेव

(2) डीहहारिन

(3) गोरबंधा पाठ

(4) छुरीपाठ

(5) गांव गोसईन

(6) सकसूर

(7) दाउछमसान
(8) कलेशर पाठ
(9) मोतीबईया
(10) ढ़ाढ़ीअंयारी
(11) गुडीसती
(12) मंडवारानी
(13) वीरपाठ
(14) बुढ़ीमां
(15) मोतीबईहा
(16) बघोरीपाठ
(17) आकाशपाठ
(18) ठाकुरदेव
(9) बूढ़ादेव
(20) भीमसेन
(21) बगरमपाठ
(22) बुढ़ीमाई
(23) महामाया

8.2 पितृ पूजा विधि :– पितृ पूजा में मृतकों को पितृ मानकर उनकी पूजा करते हैं। सामान्यतः पितरों के आगमन के विषय में मानते हैं। पितृ पक्ष के नवमी को समस्त स्त्री जाति के पितृ आते हैं। दशमी को समस्त पुरूष जाति के पितर आते हैं, तथा चतुर्दशी को बालक वर्ग के पितर आते हैं। इसके अतिरिक्त जिस दिन किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, उसी तिथि को उस व्यक्ति का पितर आ जाता है। अतः उनका श्राद्ध उस दिन किया जाता है।

8.3 देवी देवता की पूजा विधि :– कुल देवी–देवताओं एवं ग्राम देवी देवताओं की पूजा विधि में अंतर नहीं होता है। ग्राम देवी–देवताओं की पूजा बैगा सार्वजनिक कल्याण के लिए करता है, तथा कुल देवी–देवताओं की पूजा घर का मुखिया परिवार के कल्याण के लिए करता है। इन सभी देवी–देवताओं की स्थापना गांव का बैगा गांव के सरहद के भीतर किये रहते है। देवी–देवता की स्थापना स्थल में विशेष चिन्ह जैसे :– लोहे की त्रिशुल, पत्थर, पेड़ (साजा, नीम, बरगद, साल एवं पीतल) पठार, पहाड़ी आदि को देवी–देवताओं के नाम से सम्बोधित करते है, गांव की देवी–देवता की पूजा त्यौहारों के अवसरों जैसे :– हरेली, नवाखाई, अकती, देवउढन में गांव वालों उस स्थान पर तेल, हल्दी, नारियल, अगरबत्ती

लेकर इक्ठ्ठा होते हैं। गांव का बैगा उस देवी की मानता के अनुसार नारियल, धूप, अगरबत्ती, बकरा, बकरी, मुर्गी आदि की बलि देकर पूजा करता है, और गांव की सुख शांति के लिए देवी–देवता से प्रार्थना कराता हैं, यदि किसी प्रकार की भूल हो गई हो तो माफी मांगता है।

8.4 धर्म :– यहां की मझवार जनजाति में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका संपूर्ण जीवन काल धर्म पर ही आधारित रहता है। इनकी अधिकांश परंपरायें हिन्दू धर्म के अनुरूप ही है। ये हिन्दू देवी–देवताओं को प्रधानता तो देते हैं, साथ ही साथ इनके अपने देवी–देवता भी हैं जो हिन्दू शास्त्रों में नहीं मिलते। मझवारों में महादेव, दुल्हादेव एवं महामाया की पूजा का प्रचलन है। बैगा को इनमें पुजारी का स्थान प्राप्त है। देवी–देवताओं को प्रसन्न करने हेतु इनमें बलि देने की परंपरा है। ये विश्वास करते हैं कि सभी में आत्मा होती है। इस आधार पर नदी, पर्वत, पशु, पौधे एवं मृतात्मायें पूज्य हैं। मझवार जाति में पूजा स्थल ''सरना'' कहलाता है। यह इनका देव स्थान है। गांव के वार्षिक पर्व, त्यौहार एवं पूजा का कार्य यहीं संपादित होता है।

(ब) धर्म का स्वरूप :– प्रकृति पूजा घने जंगलों और उंचे पहाड़ों के बीच जीवन यापन करते हुए ये प्रकृति की संघटनाओं से सीधा संपर्क रखते हैं। धारासार वर्षा, आंधी और तूफान, जंगल की विकराल आग इन सबका उन्हें सामना करना पड़ता है। इन प्रकृतिक घटनाओं को वे देव की कृपा या देव का कोप मानते रहे है। अतः प्रकृति पूजा की अवधारणा इनमें अत्याधिक विकसित रही है। किसी अवांधित प्रकृातिक विपत्ति को अपने पक्ष और हित में करने के लिए आभिचारिक क्रिया कर देव को प्रसन्न करने की मानसिकता के पीछे भी यही तर्क स्पष्ट होता है। संक्षेप में प्रकृति पूजा के संदर्भ में उनका विश्वास है कि कुछ ऐसी अलौकिक शक्तियों हैं, जो मनुष्य के वश में नहीं हैं और उन्हें प्रसन्न किया जाना चाहिए।

8.4.1 जीवपूजा :– छत्तीसगढ़ की मझवार जाति जीव पूजक हैं। इनका जीववाद पर पूर्ण विश्वास है। वे जानते हैं कि जीवन की सत्ता है और उसकी वही जरूरतें हो सकती है जो भौतिक जीवन में थीं। अतः मृतक संस्कार के समय मृतक के साथ उसकी प्रिय शराब, तंबाखू एवं कुछ अन्य समग्रियों भी साथ रख देते हैं। नामकरण संस्कार में भी यह जानने की कोशिश की जाती है कि शिशु में उनके किस पूर्वज की आत्मा का वास है, ताकि तदनुरूप नाम रखा जा सके। इसके अलावा कुछ अच्छे धार्मिक एवं सामाजिक अवसरों पर वे किसी अति परा भौतिक घटनाओं को टालने के लिए जीव आत्मा की शांति हेतु पूजा करते हैं। बलि भी देते हैं।

8.4.2 बहु ईश्वर पूजक :– मझवार के प्रत्येक गांव/समाज के अपने–अपने देवी–देवता होते हैं। मड़ई (मेला) सामाजिक संस्कारों एवं कृषि कार्य के विभिन्न अवसरों पर इनकी पूजा–अर्चना की जाती है। जीवन के हर पहलू में देवी–देवताओं का संबंध होना ये स्वीकारते हैं। इन्हें गीत संगीत से प्रसन्न किया जाता है। इनके देवी–देवता लकड़ी, पत्थर के बने होते हैं। कभी–कभी ते ये पत्थर या लकड़ी की ही पूजा कर लेते हैं। कुछ स्थानों पर कपड़े के छोटे टुकड़ों की पूजा देखी जा सकती है। परंतु कुछ मूर्तियां सुंदर नक्काशी करके भी बनाई जाती है।

8.4.3 टोटम :– छत्तीसगढ़ के मझवार जनजाति में मानव समुदायों के बीच संबंधों के अनेक रूप मिलते है। साथ ही उनमें पशु और प्राणी जगत के साथ भी संबंधों के अनेक रूप दिखाई पड़ते हैं। इन संबंधों को टोटमवाद कहा जाता है। यहां की मझवार आदिवासी अपने को किसी प्रकार के टोटम से संबंध मानता है। उनसे अपना आनुवांशिक रिश्ता जोड़ता है। यह टोटम या तो कोई जानवर होता है, या कोई पक्षी या वृक्ष होता हैं इन संबंधों के आधार पर वे इनके प्रति अनेक अंधविश्वासों, श्रद्धा–भक्ति और आदर के भाव से भरे होते हैं। ये टोटम की विशेष पूजा आराधना करते हैं। यदि टोटम पर कोई विपत्ति आती है तो संबंधित जनजाति पर विपत्ति संभावित मानी जाती है। इस तरह टोटम में धार्मिक तथ्यों और सामाजिक संगठन का अनोखा संयोग देखने को मिलता है। जहां तक संभव है वे इन प्रतीकों को छूना, मारना, ,खाना पसंद नहीं करते हैं।

8.5 त्यौहार :– मझवार जाति के लोगों द्वारा निम्न त्यौहार मनाया जाता हैं :–

8.5.1 कठौरी (खरूज) :– कठौरी त्यौहार बैसाख माह के कृष्ण पक्ष में अष्ठमी से तेरहवीं तिथि के मध्य धान बुवाई प्रारंभ करने एवं अच्छी फसल प्राप्ति के उद्देश्य से मानते हैं। इसमें महादेव की पूजा होती है। इस दिन ग्राम के प्रत्येक परिवार के मुखिया टोकी (बांस के छोटे बर्तन में) धान को गोबर में ढंककर हलके खाल के साथ महादेव देवता (मंदिर) में ले जाते हैं, और महादेव के समक्ष रखते हैं। इसके बाद गांव का बैगा पूजा करता है। और ग्रामवासी हल के फाल की सहायता से चारों ओर जुताई करते हैं, और बैगा (पूजारी) धान को छिड़ककर बो देता है। इसके बाद सभी को एक–एक मुटठी धान देता है। जिसे घर लाकर खेत में बोने के लिए रखे धान बीज में मिला देते हैं, और खेतों में बुनाई प्रारंभ करते हैं।

8.5.2 हरेली (हरियाली) :– हरेली त्यौहार सावन माह के अमावस्या तिथि को मनाते हैं। इसमें गौहा देवता या ग्राम देवता की की पूजा ग्राम–सुरक्षा के उद्देश्य से किया जाता है। इस त्यौहार हेतु प्रत्येक घर से चंदा या सहयोग राशि एकत्र किया जाता है। इस दिन ग्राम के पुरूष सदस्य गांव के देवालय (मंदिर) में उपस्थित होते हैं। गांव का बैगा (पुजारी) जंगल से

भेलवा, करधी (पेट के उपचार में उपयोगी) के टहनियां लाता है, और देवाला में अगरबत्ती, चांवल, नारियल से पूजा कर देवाला के छत में भेलवा करधी की टहनी लगाता है। पूजा के प्रसाद को केवल पुरूषों द्वारा ग्रहण किया जाता है। पूजा के उपरांत गांव का बैगा प्रत्येक घर के द्वार (प्रवेश द्वार) में बुरी आत्माओं के प्रकोप से बचाव हेतु भेलवा, करधी की टहनी लगाता है। खेत और बाड़ी में भेलवा की टहनी बुरी नजर से बचाव के लिए लगाते हैं। साथ ही मान्यता भी हैं कि भेलवा के समान फसल भी हरा–भरा रहता है।

8.5.3 कर्मराज :– कर्मराज त्यौहार भादों शुक्ल पक्ष एकादशी को मनाया जाता है। यह त्यौहार संतान प्राप्ति एवं सुख समृद्धि हेतु मनाया जाता है। ग्राम मुखिया के आंगन में करम वृक्ष के टहनी (डाली) गांड़कर बैगा पूजा करता है। स्त्रीयां मकई (झिनोर) के जाई (जवारा) लेकर जाती हैं। दोपहर में कहानी कार करमराजा की कहानी सुनाता है। इसके बाद सभी अपने अपने घर आ जाते हैं।शाम को महिलाएं सेवाई (चांवल, आटा, गुड़ का पकवान) बनाती हैं, और खाने के पश्चात सभी मुखिया के घर जाते हैं, और पूजा स्थल पर रातभर करमा नृत्य करते हैं। सुबह उस टहनी (डाली) को उखाड़कर सभी के घरों में घुमाते हैं। प्रत्येक घर में करमी की पूजा होती हैं। इसके बाद करमी डार को नदी या तालाब में विसर्जित कर देते हैं।

8.5.3 नवाखाई :– नवाखाई भादों के शुक्ल पक्ष नवमीं में नये आनाज की खुशी में मनाया जाता है। इस त्यौहार को मनाने हेतु नये–कपड़े खरीदें जाते हैं। घर की साफ–सफाई किया जाता है। इस दिन सुबह सभी पुरूष सदस्य ग्राम देवता के देवाला मंदिर में एकत्र होते हैं। बैगा ग्राम देवता की पूजा कर धान की नयी बाली को मंदिर के चौखट में बांध देता है, और सभी पुरूषों को प्रसाद वितृत करता है। इसके पश्चात बैगा गांव के सभी घर की चौखट में नये धान की बाली बांधता हैं, व सभी घरों में नये धान के चांवल का खीर ंबनाकर और अपने घर की कुल देवता में चढ़ाकर, सभी लोग उत्साह के साथ खाते हैं। और खुशियां मनाते हैं।

8.5.4 देवठन :– यह त्यौहार कार्तिक मास एकादशी को मनाया जाता है। इसमें कोटा (पशुशाला) के देवी–देवता तथा गाय, बैल की पूजा कर आर्शीवाद मांगा जाता है। यह माना जाता हैं, कि देवी–देवता के कारण ही कृषि कार्य का निर्वाहन सम्पन्न हो सका इस दिन परिवार का मुखिया उपवास रहता है, एवं आगरबत्ती, लाली, नारियल, अक्षत आदि से देवी–देवता की पूजा कर मुर्गा या अन्य पशु की बलि देता है।

5.5.5 छेरता :– छेरता पौष माह की पूर्णिमा को हर्षोल्लास से मनाया जाता है। यह कृषि वर्ष की समाप्ति तथा नये फसल की खुशी में मनाया जाता है। मझवार सदस्य टोलियों में घुम ''सुई'' सूता लेवे जालीम कोय कोय कहते हुए अनाज मांगते है। इसके बाद बकरा या मुर्गा

की बलि देकर भोजन बनाते हैं, और खुशियां मनाते है, जाड़ पीठा बनाकर खाते है

8.6 व्रत :– मझवार जाति के लोग निम्न पर्व या त्यौहारों के उपलक्ष्य में उपवास रहते हैं व देवी–देवता की पूजा अर्चना करते हैं :–

1. नवाखाई
2. सरना
3. करमा
4. देवउठन
5. जन्माष्ठमी
6. नवरात्र
7. सावन सोमवार
8. बुना–बुनी

8.7 भूत प्रेत टोना मंत्र संबंधी विश्वास :– मझवार जाति के लोग भी भूत प्रेत, जादू, टोना आदि पर विश्वास करते हैं। गावों में किसी परिवार पर अचानक विपत्ती आने पर बैगा, मुखिया से झाड फूंक कराते हैं, तथा जादू टोना से बचने के लिए उपाय बैगा द्वारा किया जाता है। भूत प्रेत सरगुजा में जादू टोना करने का सामान्य प्रचलन है। ये सिद्धियां प्रायः स्त्रियों ही करती हैं। जो अपनी कामनाओं की सिद्धि के लिए अन्य घृणास्पद कृत्य करती है। ऐसी स्त्रियां टोनही टोनाहिया या टोनाहिन कही जाती हैं। टोना करने वाले पुरूष ''डेष्या या टोनहा कहलाते है।

8.7.1चुडैल :– ऐसी धारण है कि जो स्त्री प्रसूति के दौरान मर जाती हैं वह परेतीन या चुडैल बनती हैं तथा पुरूष प्रेत या भूत बनते है। टोनही व टोनहियों की टोने करने की समस्त शक्ति का स्त्रोंत मसान देव कहे जाते है। मसान देव के दो रूप 1. बाल मसान 2. डिंडा मसान कहलाते है।

8.7.2 जादू मारना :– टोनहा या गुनिया/ओझा दुश्मन पर जादू का प्रयोग करते है ये पहले ईष्ट देवता को मनाकर धुर्रा (धुल) चाउर (चावल) काली–पीली हल्दी व कोयले में रंग कर नये चांवल का उपयोग करते है जादू छुडाने के लिए साधक अपने ईष्ट देवता की याद करके जादू को निर्मबल कर देते या वापस भेज देते हैं।

मझवार जाति के लोग कुछ सूचकों को शुभ व कुछ को अशुभ मानते है जिसका वितरण नीचे प्रस्तुत हैं :–

1. बिल्ली का रास्ता काटना
2. रात में कुत्ते बिल्ली का रोना

3. उल्लू का दिन में बोलना
4. चौराहो पर टीका वंदन आदि रखना
5. पीपल / बेर पेड के पास मुर्रा, चुड़ी रखना

8.7.3 शुभ मानना :–

1. दाये अंग का फड़कना, आंख, भूजा आदि का पड़कना।
2. भरे घड़े वाली महिला को देखना
3. दूध पिलाते जानवर को देखना
4. नीलकठ पक्षी का दर्शन होना

आदि शुभ शगुन माना जाता है।

अध्याय – नौ
लोक परम्पराएं

जनजातियां प्रकृति की संतान है, उन्हें प्रकृति ने मुक्त हस्त से प्राकृतिक सुषमा प्रदान की है, रहने को निवास, खाने को अन्न, कंद मूल, फल अन्य संसाधन उन्हें सुलभ ही उपलब्ध है। वन जातियों का सारा जीवन प्रकृति पर अवलम्बित रहा है। वे प्रकृति अमुल्य धरोहर को विस्तृत नहीं कर सकते। इसी कारण वे अपने ढंग से प्रकृति की उपासना करते आ रहें है। ऋतुओं पर आश्रित इनके विविधि प्रकार के संस्कार इनके जीवन चक्र को आत्म निर्भर बनाते हैं :–

9.1 **बोली** :– मझवार जाति के लोग स्थानीय स्तर पर बोलचाल एवं विचार अभिव्यक्त के लिए **सरगुजिहा एवं सादरी बोली का प्रयोग करते हैं। साथ ही साथ देवनागरी भाषा हिन्दी का भी प्रयोग करते हैं।**

9.2 **गीत** :– मझवार जाति के लोग विभिन्न अवसरों ऋतुओं, महीना, त्यौहारों, संस्कारों, कृषि कार्यो आदि में गाये जाने वाले लोकगीत निम्न है :–

1. करमा गीत 2. सुआ गीत 3. ददरिया गीत 4. छेरता गीत 5. डमकच गीत 6. भुईयारी गीत 7. फाग गीत 8. संस्कार गीत।

9.2.1 **करमा गीत** :– यह छततीसगढ़ के आदिवासियों का मुख्य लोकगीत है। करमा नृत्य के साथ गाये जाने वाले गीत को करमा गीत के नाम से जाना जाता है। करमा गीत के कुछ अंश प्रस्तुत है :–

'' चलो नाचे जाबा के गोलेंदा जोड़ा
करमा तिहार आये है, नाये जाबो रे।
पहली मैं सुमिरों सरस्वती माई रे
पाहू गौरी गणेश रे गोलेंदा जोड़ा।।
गांव के देवी देवता के पइंया लगारे
गोड़ लागों गुरूदेव के रे गोलेंदा जोड़ा ।।

9.2.2 सुआ गीत :– यह गीत स्त्रियों के बिरहा को व्यक्त करता हुआ सा प्रतीत होता है। इस गीत की प्रत्येक पंक्ति में स्त्रियां सुअना को सम्बोधित करते हुए अपनी आंतरिक वेदना को व्यक्त करती है, सरगुजा अंचल में प्रचलित सुआ गीत के अंश इस प्रकार है :–

'' तरी नरी नहा, नरी नहा नरी ना ना रे सुअना
कइसे के बनगे वो ह निरमोही रे सुअना।
कोन बैरी राखे विलमाय
चोंगी अस झोइला में जर–झर गेंव रे सुअना।

9.2.3 ददरिया :– यह मूलतः एक प्रेमी–गीत है जिसमें श्रृंगार की प्रधानता होती है ददरिया दो–दो पंक्ति के स्फूट गीत होते हैं। ददरिया गीत स्त्री और पुरूष मिलकर अथवा अलग–अलग भी गाते हैं। जब स्त्री और पुरूष गाते हैं तब ददरिया सवाल–जवाब के रूप में गाया जाता है। ददरिया किसी भी समय गाया जा सकता है। महुआ बीनते हुए, धान रोपते हुए, धान कराते हुए, राह में चलतें हुए, चक्की पीसते हुए आदि कभी भी किसी समय में ददरिया गीत गाए जा सकते हैं। ददरिया गीतों का विषय जीवन का कोई बात हो सकती है, जिसमें युवा मन के प्रेम श्रृंगार की चर्चा हो। ददरिया के कुछ अंश इस प्रकार है :–

'' मोर सइकिल के चढढ़इया ल चिन्ही लेइतेंव ग।।
राम धरे बरछी लखन धरे बान
सीता भाई के खोजन बर निकलगे हनुमान ग।।
पहिरे ल पनही खाये ल बीरा पान।
मोर रइपुर के रहइया चल दिस पाकिस्तान ग।।

9.2.4 छेरता गीत :– छेरता गीत पौष माह की पूर्णिमा के दिन छेरता (छेराछेरा) त्यौहार के अवसर पर बच्चे नई फसल के धान मांगने के लिए घर घर अपनी दस्तक देते समय गाते हैं। :–

(1) लोक लोकड़ी लोकर खोरसा लोकड़ी
ककईया गथोली मदुर देवला लोकड़ी
(2) बांस पान रट–रट हमला देईहा झर–पर लोकड़ी–लोकड़ी।
(3) नदी धरी मेड़ खुंआ–मेड़ खुंटा हमला देईहा डेढ़ सुपा
लोकड़ी – लोकड़ी।
(4) गोरसी आगी भमके–भमके ऐ घर के

पहुया मन चमके चमके लोकड़ी।

9.2.5 विवाह गीत :— मझवार जाति में विवाह के अवसर में कई प्रकार की रस्म गीत गाए जाते हैं :—

(1) **हरियर हरियर मोर मड़वा में दुलरू वो कांचा तिली के तेल**
कोन तोर लानिथय मोर हरदी सुपारी वो कांचा तिली के तेल
ददा तो लानिथय मोर हरदी सुपारी वो दाई आनय तिली के तेल
कोन चढ़ाथय तोर तन भर हरदी वो कोन देवय अंचरा के छांव
फुफु चढ़ाथय तोर तन भर हरदी वो दाई देवय ऑचरा के छांव
राम लखन के मोर तेल चढ़त थे वाजा के सुनव तुमन तान

(2) **एके तेल चढ़गे कुंवरि पियराय।**
दुए तेल चढ़गे महतारी मुरझाय।।
तीन तेल चढ़गे फुकु कुम्हलाय।
चडथे तेल चढ़गे भइया बिलमाय।
छये तेल चढ़गे भहुजी मुसकाय।।
साते तेल चढ़गे कुवरि पियराय।
हरदी ओ हरदी तै सांस या समाय।।
तेले हरदी चढ़गे देवता ल सुमुरेव।
मंगरोहन ल बांधेव महादेव सुमरेंव।

9.3 नृत्य :— मझवार जाति के लोग विभिन्न अवसरों पर डोमकच नृत्य, सुआ नृत्य, करमा नृय, डंडा नृत्य आदि करते हैं :—

9.3.1 डोमकच नृत्य :— डोमकच नृत्य छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोक नृत्यों में से एक है। यह नृत्य मझवार आदिवासी युवक—युवतियों का बहुत ही प्रिय नृत्य है। प्रायः यह नृत्य विवाह आदि के शुभ अवसर पर किया जाता है। यही कारण है कि इस नृत्य को विवाह नृत्य के नाम से भी जाना जाता है।

- डोमकच नृत्य अगहन से आषाढ़ माह तक रात में किया जाता है।
- अधिकाशतः यह नृत्य वृत्ताकार रूप में नाचते हुए किया जाता है।
- नृत्य में एक लड़का और एक लड़की गले और कमर में हाथ रखकर आगे—पीछे होते हुए स्वतंत्रतार्वूक नाचते है।
- इस नृत्य के प्रमुख वाद्ययंत्रों में मांदर, झांझ और टिमकी आदि का प्रमुख रूप उपयोग किया जाता है।

- डोमकच नृत्य के गीतों में 'सदरी बोली' का प्रयोग अधिक किया जाता है।

9.3.2 सुआ नृत्य :– सुआ नृत्य छत्तीसगढ़ राज्य की स्त्रियों का एक प्रमुख है, जो कि समूह मे किया जाता है। स्त्री मन की भावना, उनके सुख–दूख की अभिव्यक्ति और उनके अंगों का लावण्य 'सुवा नृत्य' या 'सुवना' में देखने को मिलता है। 'सुआ नृत्य' का आरंभ दीपावली के दिन से ही हो जाता है। इसके बाद यह नृत्य अगहन मास तक चलता है।

नृत्य पद्धति :–

- वृत्ताकार रूप में किया जाने वाला यह नृत्य एक लड़की जो सुग्गी कहलाती है धान से भरी टोकरी में मिट्टी का सुग्गा रखती है। कहीं–कहीं पर एक या दो सुग्गा रखे जाते हैं। ये भगवान शिव और पार्वती की प्रतीक होते हैं। टोकरी में रखे सुवे को हरे रंग के नए कपड़े और धान की नई मंजरियों से सजाया जाता है। सुग्गी को घेरकर स्त्रियाँ ताली बजाकर नाचती हैं और साथ ही साथ गीत भी गाये जाते हैं। इन स्त्रियों के दो दल होते है पहला दल जब खड़े होकर ताली बजाते हुए गीत गाता है तब दूसरा दल अर्द्धवृत्त में झूककर ऐड़ी और अंगूठे की पारी उठाती और अगल–बगल तालियाँ बजाकर नाचतीं और गती हैं।

''चंदा के अंजोरी म
जुड़ लागय रतिहा
न रे सुवना बने लागय
गोरसी अऊ धाम।
अगहन पूस के ये
जाड़ा न रे सुवना
खरही म गंजावत हावय धान।''

9.3.3 डंडा या शैला नृत्य :–

डंडा नृत्य छत्तीसगढ़ राज्य का लोकनृत्य है। इस नृत्य को 'सैला नृत्य' भी कहा जाता है। यह पुरूषों का सर्वाधिक कलात्मक और समूह वाला नृत्य है। डंडा नृत्य में ताल का विशेष महत्व होता है। डंडों की मार से ताल उत्पन्न होता है। यही कारण है कि इस नृत्य को मैदानी भाग में 'डंडा नृत्य' और पर्वती भाग में 'सैला नृत्य' कहा जाता है। 'सैला' शैल का बदला हुआ रूप है, जिसका अर्थ 'पर्वतीय प्रदेश' से किया जाता है।

वस्त्र विन्यास

डंडा नृत्य करने वाले समूह में 46 से लेकर 50 या फिर 60 तक सम संख्या में नर्तक होते

हैं। ये नर्तक घुटने से उपर तक धोती—कुर्ता और जेकेट पहनते हैं। इसके साथ ही ये लोग गेंदा की माला से लिपटी हुई पगड़ी भी सिर पर बाँधकर धारण करते हैं। इसमें मोर के पंख की कडियों का झूल होता है। इनमें से कई नर्तकों के द्वारा रूपिया माला, सुताइल, बहुंटा, चूरा और पाँव में घुंघरू आदि पहने जाते हैं। आँख में काजल, माथे पर तिलक और पान से रंगे हुए ओंठ होते हैं।

नृत्य पद्धति

एक कुहकी देने वाला, जिससे नृत्य की गति और ताल बदलता है। एक मांदर बजाने वाला और दो—तीन झांझ—मंजीरा बजाने वाले भी होते हैं। बाकी बचे हुए नर्तक इनके चारों ओर वृत्ताकार रूप में नाचते हैं नर्तकों के हाथ में एक या दो डंडे होते हैं। नृत्य के प्रथम चरण में ताल मिलाया जाता है। दूसरा चरण में कुहका देने पर नृत्य चालन और उसी के साथ गायन होता है। नर्तक एक दूसरे के डंडे पर डंडे से चोंट करते हैं। कभी उचकते हुए, कभी नीचे झुककर और अगल—बगल को क्रम से डंडा देते हुए, झूम—झूमकर फैलते—सिकुड़ते वृत्तों में त्रिकोण, चतु कोण और षटकोण की रचना करते हुए नृत्य किया जाता है। डंडे की समवेत ध्वनि से एक शोरगुल भरा दृश्य उपस्थित होता है। नृत्य के आंरभ में ठाकुर देव की वंदना फिर माँ सरस्वती, गणेश और राम—कृष्ण के उपर गीत गाए जाते हैं।

'पहिली डंडा ठोकबो रे भाई, काकर लेबो नाम रे ज़ोर,
गावे गउंटिया ठाकुर देवता, जेकर लेबो नाम रे ज़ोर।
आगे सुमिरो गुरू आपन ला, दूजे सुमिरों राम ज़ोर,
माता—पिता अब आपन सुमिरों गुरू के सुमिरों नाम रे ज़ोर।'

डंडा नृत्य कार्तिक माह से फाल्गुन माह तक होता है। पौष पूर्णिमा यानी की छेरछेरा के दिन मैदानी भाग में इसका समापन होता है।

9.3.4. कर्मा नृत्य :—

भादों मास की एकादशी को उपवास के पश्चात् करमवृक्ष की शाखा को घर को आंगन या चौगान में रोपित किया जाता है। दूसरे दिन कुल देवता को नवान्न समर्पित करने के बाद ही उसका उपभोग शुरू होता है। कर्मा नृत्य नई फसल आने की खुशी में किया जाता है।

नृत्य के प्रकार

यों तो कर्मा नृत्य की अनेक शैलियाँ हैं, लेकिन छततीसगढ़ में पांच शैलियाँ प्रचलित हैं, जिसमें झूमर, लंगढ़ा, ठाढ़ा, लहकी और खेमटा हैं। जो नृत्य झूम—झूम कर नाचा जाता है, उसे

'झूमर' कहते हैं। एक पैर झुकाकर गाया जाने वाला नृत्य 'लंगड़ा' है। लहराते हुए करने वाले नृत्य को 'लहकी' और खड़े होकर किया जाने वाले नृत्य 'ठाढ़ा' कहलाता है। आगे–पीछे पैर रखकर, कमर लचकाकर किया जाने वाला नृत्य 'खेमटा' है। खुशी की बात है कि छततीसगढ़ का हर गीत इसमें समाहित हो जाता है। कर्मा नृत्य में स्त्री–पुरूष सभी भाग लेते हैं। यह वर्षा ऋतु को छोड़कर सभी ऋतुओं में नाचा जाता है। सरगुजा के सीतापुर के तहसील, रायगढ़ के जशपुर और धरमजयगढ़ के आदिवासी इस नृत्य को साल में सिर्फ चार दिन नाचते हैं। एकादशी कर्मा नृत्य नवाखाई के उपलक्ष्य में पुत्र की प्राप्ति, पुत्र के लिए मंगल कामना। अठई नामक कर्मा नृत्य क्कांर में भाई–बहन के प्रेम संबंध, दशई नामक कर्मा नृत्य और दीपावली के दिन कर्मा नृत्य युवक–युवतियों के प्रेम से सराबोर होता है।

वस्त तथा वाद्ययंत्र

कर्मा नृत्य में मांदर और झांझ–मंजीरा प्रमुख वाद्ययंत्र है। इसके अलावा टिमकी ढोल, मोहरी आदि का भी प्रयोग होता है। कर्मा नर्तक मयूर पंख का झाल पहनता है, पगड़ी में मयूर पंख के कांड़ी का झालदार कलगी खोंसता है। रूपया, सुताइल, बहुंटा ओर करधनी जैसे आभूषण पहनता है। कलई में चूरा और बांह में बहुटा पहने हुए युवक की कलाइयों और कोइनियों का झूल नृत्यकी लय में बड़ा सुन्दर लगता है। इस नृत्य में संगीत योजना बद्ध होती है। राग के अनुरूप ही इस नृत्य की शैलियाँ बदलती है। इसमें गीता के टेक, समूह गान के रूप में पदांत में गूंजते रहता है। राग के अनुरूप ही इस नृत्य की शैलियां बदलती है। इसमें गीता के टेक, समूह गान के रूप पदांत में गूंजते रहता है। पदों में ईश्वर की स्तुति से लेकर श्रृंगार परक गीत होते हैं। मांदर और झांझा की लय–ताल पर नर्तक लचक–लचक कर भांवर लगाते, हिलते–डुलते, झुकते–उठते हुये वृत्ताकार नृत्य करते हैं।

उपवास

कर्मा की मनौती मानने वाला दिन भर उपवास रखता है और अपने सगे–संबंधियों और पड़ोसियों को देतो है। शाम के समय करमा वृक्ष की पूजा कर टंगिये के एक ही वार से डाल को काटा जाता है, उसे जमीन में गिरने नहीं दिया जाता। उस डाल को अखरा में गाड़कर रत्री–पुरूष रात भर नृत्य करते हैं और सुबह उसे नदी में विसर्जित कर देते हैं। इस अवसर पर गीत भी गाये जाते हैं–

उठ उठा करमसेनी पाही गिस विहान हो,
चल चल जाबो अब गंगा असनांद हो।

9.4 लोक कथाएं (धार्मिक) :–

सरगुजा अंचल में करम देव की लोक कथा प्रचलित है । मझवार जाति के लोग भी इस कथा को सुनते हैं या कहते हैं, जो इस प्रकार है :–

करम देव की कहानी :–एक ग्राम में एक बड़ा धनी व्यक्ति रहता था उसके 7 पुत्र थे सभी का विवाह हो गया था सब परिवार आनंद पूर्वक रहते थे। क्वार एकादशी के दिन परिवार का मुखिया अपने बेटों को पैसा देकर नया कपड़े व आवश्यक सामान खरीद लाने के लिए कहा। सातों भाई खरीददारी करने के लिए निकल गए। सभी आवश्यक वस्तुएं नये कपड़े, वस्तुए आदि खरीद कर वापस आ रहे थे। बीच में नदी पड़ती थी। नदी बरसात होने के कारण उफान में बह रहा था। सभी भाई सात गड़ाकर वही डेरा डाल दिए। कुछ दिनों बाद भी नदी का पानी कम नहीं हुआ तो बड़ा भाई बोला, हम में से कोई एक जाकर घर सूचना दे कि हम लोग यहां पर आ गए है। सबसे छोटा भाई बोला कि मैं जाता हूं ऐसा कहकर वह उफनती नदी में तैरकर पार हो गया। उस दिन भाद्रपद शुक्ल पक्ष का एकादशी तिथि था। आगे बढ़ने पर उसे मांदर तथा नाच गाने की ध्वनि सुनाई पड़ी। वह उसी दिशा में चला गया। वहां जाकर देखा कि करम का डाल लहरा–लहराकर झुम रहा है तथा युवक–युवतियां हड़िया पीकर नाच गा रहे है। वह युवक भी हड़िया पी कर उनके साथ शामिल हो गया व नाचने लगा तथा घर जाने की बात भूल गया। कुछ दिनों बाद छोटा भाई वापस नहीं आया तब बड़े भाई एक–एक कर सभी भाई को भेजा कोई भी वापस नहीं आया। तब बड़ा भाई स्वयं नदी पार कर जाने लगा तब उसे भी वहीं मांदर की आवाज व नाच गाने की ध्वनि सुनाई पड़ी। वह भी उसी ओर चला गया। वहां जाकर देखा कि करम का डाल लहलहा रहा है तथा सभी वहां मादर बजाकर नाच रहे है। उनके सभी भाई भी हड़िया के नशे में नाच रहे है। बड़े भाई को गुस्सा आया वह तलवार/कुल्हाड़ी निकाला व करमडार को काट डाला। करम डार के कहते ही सभी लोग वहां पत्थर की बूत में परिवर्तित हो गये जो जैसा था वैसा ही पत्थर बन गया। बड़ा भाई वापस घर गया वहां देखा कि पूरा परिवार घर, पशु आदि पत्थर के रूप परिवर्तित हो गया है। वह अपने करम (किस्मत) को कोसता हुआ हाय करम–हाय करम कहते हुए रोता चला जा रहा था। रास्ते में एक बुढ़िया मिली उसने पुछा कि हाय करम हाय करम क्यों कर रहे हो तब वह सभी बात बुढ़िया को बताती है बुढ़िया कहती है कि करम की बिनती करो तो सब कुछ ठीक हो

जाएगा तो उसने बुढ़िया ने कहा कि सात समुद्र के पार करम राजा रहता है। उसके पास जाकर बिनती करो तो सब कुछ ठीक हो जाएगा तो उसने बुढ़िया से पुछा कि मैं सात समुद्र कैसे पार कर पाउंगा। तब बुढ़िया ने उसे तुम्बा (लौकी) का बीज दिया और कहा कि जब तुम सागर के पास पहुचोंगे तब यह बीज किनारे बो देना। यह बड़ा होता जाएगा तथा इसकी लता बढ़ती हुई करम राजा के पास पहुंच जाएगा। तुम फल को तोड़ लेना और गुदा निकालकर नाव बनाकर करम राजा के पास पहुंच जाआगे। सुबह वह भाई सागर की तरफ प्रस्थान किया। रास्ते में वह हाय करम हाय करम कहते जा रहा था। जंगल में उसे जाते जाते रास्तें में एक महिला मिली उसके सिर में जटा तथा अन्य छोटे—छोटे घांस उग रहे थे जिसका भार वह नहीं उठा पा रही थी उसने उस भाई से पुछी कि तुम क्यों रो रहे हो तथा कहां जा रहे हो। भाई ने सब कथा सुनाई तथा कहा कि वह करम राजा के पास जा रहा है ताकि वह इन समस्याओं से छुटकारा मिल जाए। वह महिला बोली कि मेरी समस्या भी करम राजा के पास रखना तथा पुछना की मेरी समस्या का समाधान है कि नहीं। हां कह कर आगे बढ़ा रास्ते में फिर एक महिला मिली, उसके कुल्हा में ''पीढ़ा'' (बैठने के लिए बनाया गया लकड़ी का पाटा) चिपक गया था जिसके कारण वह परेशान रहती थी। उस महिला ने भी उससे पुछी की वह रोते—रोते कहां जा रहा है तब उसे भी वहीं कहानी बताया कि कैसे उसके भाई और धन सम्पदा पत्थर का हो गया है अतः वह समस्या समाधान हेतु करम राजा के पास जा रहा है। महिला हाथ जोड़ कर बोली कि बेटा करम राजा से यह भी पुछना की मेरे कुल्हा में पीड़ी क्यों चिपक गया है। यह कैसे छूटेगा। आगे जाने पर उसे एक चरवाहा मिला उसने भी पुछा तुम यह हाय करम—हाय करम क्यों कर रहे हो तब उससे भी कारण बताया तथा बताया कि वह करम राजा के पास जा रहा है। तब चरवाहा ने कहा कि मेरी भी समस्या है कि मेरा कच्छा बढ़ता ही जा रहा है यह कम होगा कि नहीं हां कह कर वह फिर आगे बढ़ा।

वह चलते—चलते सागर के पास पहुंचा विशाल सागर को देखकर वह डर गया। साहस कर बुढ़िया के बताये अनुसार वहां बीज का रोपण कर दिया। बीज का लता बढ़ते समुद्र में बढ़ने लगा। वह व्यक्ति लता के सहारे तैरता—तैरता समुद्र के पास पहुंच गया। वह लता बीच समुद्र में करमडार लहलहा रहा था उसमें जा कर लिपट गया। बड़ा भाई तैरते—तैरते वहां पहुंच कर देखा कि वहां करम राजा लहलहां रहा है तथा लोग नाच गा रहे है। वह भी करम डार के पास पहुंचा तथा नाच गा कर करम डार (भगवान) की पूजा करने लगा बहुत प्रार्थना करने पर करम राजा

प्रसन्न हुआ तथा कहा कि यह पानी ले जाओं तथा सब पर छिड़क देना तुम्हारा परिवार सब ठीक हो जाएगा।

भाई ने दोनों महिलाओं व चरवाहा की समस्या के बारे बताया तथा उसका निदान पुछा। करमदेव ने बताया कि पहली महिला अपने ससुर, भसुर (पति के बढ़े भाई) और बहिन दामाद के समक्ष सिर को साड़ी से नहीं ढंकती (खुला रखती) है। उनका सम्मान नहीं करती है उसी प्रकार दुसरी महिला भी किसी बड़े बुजूर्ग का आदर नहीं करती है ससुर व बड़े बुजुर्गो के सामने पीढ़ा आदि में बैठ जाती है। इसलिए उसे ऐसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। यदि वे इससे छुटकारा चाहते है तो यह पानी छिड़क देना तथा कहना कि वे बुजूर्गो का सम्मान करें तथा बड़ों के सामने पीढ़ा पर नहीं बैठे। तब भाई ने चरवाहा की समस्याएं रखी तब उसका भी निदान करम देव ने बता दिया।

बड़ा भाई सबकी समस्याओं का समाधान लेकर वापस आया। रास्ते में उसे वहीं चरवाहा मिला उसने कहा कि तुम अपना लगोंट दीमक के बिल में डालकर ढक दो फिर यह नहीं उग पाएगा। चरवाहा ने लंगोट दीमक के बिल में डाल कर ढक दिया लंगोट बढ़ती थी उसे दीमक खा–खाकर नष्ट कर देता था। उस प्रकार चरवाहा की समस्या का अंत हो गया। फिर आगे जाकर वहीं महिला मिली जिसके कुल्हा में पीढ़ा चिपका था। उसके पास जाकर कहा कि तुम अपने बुजुर्गो का सम्मान नहीं करती थी। इसलिए तुमको इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है। तुम वादा करो कि आगे बुजुर्गो का सम्मान करोगी व उनके सामने पीढ़े पर नहीं बैठोगी। महिला के वादा करने पर उसके उपर करमदेव का जल छिड़क दिया। पीढ़ा अपने आप उसके कुल्हे से गिर गया। उसके बाद वह महिला मिली जिसके सिर पर जटा एवं घास उग रहा था। उसको बताया कि वह अपने ससुर एवं भसुर का सम्मान करे उनके समक्ष अपने सिर को पल्लु से ढ़ंक कर रखे महिला के वादा करने पर उसके उपर जल छिड़क दिया। जल की बुंदे पड़ते ही उसके सिर से जटा व घास अपने आप गिर गया। इस प्रकार उस महिला की समस्या का भी समाधान हो गया।

अब भाई अपने घर पहुंचा तथा सभी पर पानी का छिड़काव किया उसका सभी कुटुम्ब भाई, माता–पिता, पशुधन अनाज सब पहले जैसा ही हो गया। इस प्रकार करम देव की पूजा के कारण वह फिर से खुशहाल जीवन जीने लगा।

9.5 कहावतें :–

मझवार जाति के दैनिक जीवन में अनेक कहावतें प्रचलित है। ये कहावतें उनके दैनिक जीवन, आर्थिक कार्यो व सामाजिक तथा धार्मिक कार्य, मौसम, पशु पक्षी आदि से जुड़ी हुई है। अर्थात मझवार संस्कृति में प्रचलित कहावते प्रकृति एवं सांस्कृतिक परिवेश से संबंधित है। जिसे लम्बे समय से जन सामान्य द्वारा बोल–चाल में उपयोग किया जा रहा है। ये कहावत वार्तालाप के समय अपनी बात को सटीक एवं संक्षिपत रूप से प्रस्तुत करने में मदद करती है। कहावतें लोक अनुभव से बनती है। किसी समाज ने जो कुछ अपने लम्बे अनुभव से सीखा है उसे एक वाक्य में बांध दिया है। एसे वाक्यों को ही कहावत या लोकोतियां कहते हैं। मझवार जाति मेंइ कुछ कहावतें या लोकतियांद निम्न है :–

1. **तीन तिरसढ़ चौदह चालीस :– काम करते–करते बिगाड़ देन पर ये कहावते बोलते हैं**
2. **आन कहत तान कोदो कहत धान :– गलत सुनना और गलत अर्थ निकालना।**
3. **खाएं ले सुदी नहीं पादे ले भुसा नईयया हे :– मरे पास कुछ भी नहीं है।**
4. **जल में रहकर मगर से वैर :– किसी के आश्रय में रहकर उससे शत्रुता मोल लेना**
5. **दूध का दूध पानी का पानी :– सच और झुट का सही फैसला।**
6. **ना रहेगा बांस ना बजेगी बासूरी :– कारण के नष्ट होने पर कार्य न होना।**
7. **मान न मान मै तेरा मैहमान :– जबरजस्ती किसी का मैहमान बनना।**
8. **मन चंगा तो कठौती में गंगा :– यदि मन पवित्र है तो घर ही तिर्थ है।**
9. **बगल में छुरी मुंह में राम–राम :– भीतर से शत्रुता और उपर से मिठी बातें।**
10. **सॉप मरे न लाठी न टूटे :– हानि भी न हो और काम भी बन जाए।**
11. **सौ सुनार की एक लोहार की :– निर्बल के सैकड़ों चोटों के सबल एक ही चोट से मुकाबला कर देते है।**
12. **जैसन ओकर दाई–दाउ वैसन ओकर लईका।**
    जैसन ओकर घर–द्वार वैसन ओकर फरिका।

इसका तात्पर्य हैं कि जैसे मां बाप होते हैं वैसा ही उनका बच्चा होता है। उसी प्रकार जैसे उनके घर होते हैं वैसा ही दरवाजा/द्वार होता है। अर्थात जैसे लड़के को देख कर उनके मां–बाप के विषय में ज्ञान हो जाता है। उसी प्रकार द्वार को देखकर घर का अंदाजा हो जाता हैं।

14. साई मुर्गी घर भर के खाय।
बदरी डोहैं तो समधी जाय।

इसका तात्पर्य हैं कि परिवार में समधी के मेहमान/अतिथि आने पर मुर्गी काटते है। जिसका भोजन के दौरान अधिकांश हिस्सा परिवार जन के पास आता है। लेकिन मुर्गी का जान जाने का दोष समधी पर आता है।

9.6 खेलकुद :–

मझवार जाति के बच्वें मनोरंजन एवं शारीरिक विकास के लिए आमतौर पर लौर, लाठी, खस्ती, छैला–डण्डा, गिल्ली–डण्डा, कुस्ती, कबड्‌डी, पिठूल्ल, लुकाझिपी आदि खेलकुद प्रचलित है।

9.7 मनोरंजन के अन्य साधन :–

मझवार जाति के लोग पारम्परिक खेलकुद एवं समय–समय पर जंगलों में शिकार एवं जल स्त्रतों में मछली पकड़ने के रूप में मनोरंजन करते है, तथा गांव में चौपाल लगाकर किस्सा–कहानी सुनते है।

अध्याय – दस
जीवन परिवर्तन

मझवार जाति में शिक्षा, अवागमन एवं बाह्य सम्पर्क तथा नीवन तकनीकों के प्रयोग के कारण उनकी जीवन शैली, रहन सहन में परिवर्तन देखने को मिलता है। इन नवीन आयामों के कारण प्राचीन रीति–रिवाजों परम्पराओं एवं भौतिक में बदलाव दिखाई देता हैं :–

10.1 भौतिक संस्कृति में परिवर्तन :–

(अ) ग्राम :– मझवार निवासरत ग्रामों में प्राय : प्राय : लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं जैसेः– गांव में पाठशाला, आगनबाड़ी, विद्युत, पेयजल, हैंण्डपम्प, सड़क आदि की व्यवस्था होने से उनके जीवन में इसका प्रभाव देखने को मिलता हैं।

(ब) आवास :– परम्परागत आवास के स्थान पर नई शैली के आवास का निर्माण होने लगा है। आवास निर्माण हैंतु पक्की ईट, सीमेंट, रेत, बड़ी खिडकियां का उपयोग करने लगे हैं। घरों की पुताई छुही से करते हैं।

(स) दैनिक उपयोगी वस्तुएं :– मझवार परिवारों में नवीन दैनिक उपयोगी वस्तुओं का समावेश होने लगा है। वर्षा काल में छाता, रैनकोट, उपयोग होने लगा है

(स) **रसोई की वस्तुएं** :– मझवार जाति में रसोई में मिट्टी के बर्तनों के स्थान पर अब भोजन बनाने हेतु एल्यूमिनियम से बने बर्तनों का उपयोग होना लगा है

(द) **वस्त्र विन्यास एवं साज श्रृगांर** :– शारीरिक स्वच्छता हेतु अब दातौन के स्थान पर अब टूथ–ब्रस एवं टूथपेस्ट व स्नान एवं कपड़े धोने हेतु साबून और वासिंग पाउडर तथा बाल नाई से कटाने लगे हैं। स्नान के पश्चात श्रृगांर हैंतु सुगंधित तेल, पाउडर, बिंदिया, फीता, क्लिप का प्रयोग करने लगे हैं।

(फ) **आर्थिक कार्यो संबंधित वस्तुएं** :– मझवार जाति के लोग कृषि हेतु हल–बैल का उपयोग करते हैं। शिकार तथा मछली मारने का कार्य कम होने के कारण इसके संबंधित भौतिक वस्तुओं की संख्या में कमी परिलक्षित हो रही हैं।

(ज) **अवागमन के साधन** :– मझवार जाति के सदस्य सायकल का उपयोग अवागमन के साधन के रूप में करते हैं।

10.2 जीवन संस्कार में परिवर्तन :–

1. मझवार जाति में प्रसव पारम्परिक दाई के द्वार किया जाता था। वर्तमान में प्रशिक्षित मितानीन (दाई) एवं नर्स की देखरेख में ग्राम की मितानीन के द्वारा किया जाता है। कुछ परिवारों में अस्पताल में भी प्रसव कराने लगे हैं। वर्तमान में नवजात शिशु के नाल काटने के लिए ब्लेड का

उपयोग किया जाने लगा हैं।

2. वर्तमान समय में गांव—गांव में आगनबाड़ी तथा स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार के कारण माता व शिशु के पोषण टिकारण की स्थिति में सुधार दिखाई दे रहा है।

3. मझवार समाज में अल्पायु में विवाह की प्रथा भी वर्तमान में विवाह आयु में परिवर्तन हुआ है।

4. मझवार जाति में पूर्व में वैवाहिक कार्यक्रम पांच दिनों का होता था, किन्तु खर्च की अधिकता एवं समायाभाव के कारण विवाह तीन दिनों में सम्पन्न होने लगे है।

5. जन्म एवं विवाह अवसरो में दिये जाने वाले उपहार के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है।

6. जन्म एवं विवाह संस्कार में पारम्परिक गीत संगीत के साथ—साथ आधुनिक गीत संगीत वाद्‌ययंत्रों, लाउडस्पीकर का उपयोग होने लगा है

10.3 सामाजिक जीवन में परिवर्तन :—

1. पूर्व मे मझवार जाति के लोग अन्य समक्ष जाति के साथ खान—पान संबंध नहीं था किन्तु वर्तमान समय में सामाजिक गतिविधियों में वृद्धि होने के कारण आपस में भोजन ग्रहण करने लगे हैं। अर्थात सामाजिक दूरी में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है।
2. मझवार जाति में सुंयक्त परिवार को आदर्श माना जाता है। किन्तु आपसी तालमेल व सामंजस्य के अभाव में संयुक्त परिवार विघटित होकर एक परिवार का स्वरूप ग्रहण करने लगे हैं।
3. मझवार परिवारों में परिवार के मुखिया निर्णय लेने हेतु स्वतंत्र था जिसे सभी परिवार के सदस्य स्वीकार करते थे किन्तु वर्तमान में परिवारिक निर्णय आपसी सहमति के आधार पर होने लगे हैं।
4. अन्तर्जातिय सम्पर्क बढ़ने से यात्रा, निवास, खान—पान संबंधी नियमों में परिवर्तन आया हैं।

10.4 आर्थिक जीवन में परिवर्तन :— मझवार जाति के अर्थव्यवस्था में वनोपज संकलन, शिकार, मछली मारने का कार्य सीमित होने लगा हैं, तथा कृषि तथा गैर शासकीय मजदूरकी एवं शासकीय मजदूरी (मनेरेगा) मजदूरी में वृद्धि होने लगा हैसाथ—साथ शासकीय नौकरी की ओर लोगों का सुझान बढ़ने लगा है

10.5 धार्मिक जीवन में परिवर्तन :— मझवार जाति के धर्म प्रकृति आत्मा आलौकिक शक्ति के विश्वास पर आधारित हैं वे अपने प्राचीन रीति—रिवाजों के अनुसार पूजा अनुष्ठान का निर्वाहण करते हैं, तथा साथ ही साथ हिन्दु देवी—देवताओं को भी पूजा एवं मानने लगे हैं।

10.6 नृत्य संगीत में परिवर्तन :— मझवार जाति में जीवन संस्कार, धार्मिक कार्यक्रमों एवं मनोरंजन हेतु लोकगीत संगीत का प्रचलन पारम्परिक के साथ—साथ इसमें नवीनता दिखाई देने लगा है

10.7 शैक्षणिक स्थिति में परिवर्तन :— मझवार जाति में शिक्षा की स्थिति में परिवर्तन आया है। पूर्व में बालिका की शिक्षा स्तर कम थी, जिसमें सुधार हो रहा है। पूर्व में मझवार बालक प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त कर रहें थे। अब उच्च्च शिक्षा भी प्राप्त करने लगे हैं।

अध्याय – ग्यारह

समस्याएं

मझवार जाति विकास हेतु प्रयासरत हैं किन्तु निम्न समस्याएं उनके विकास में बाधक हो रही हैं :–

11.1 सामाजिक समस्याएं :–

(1) बाल विवाह प्रचलन :– दुर्गम क्षेत्र में निवासरत होने के कारण एवं जागरूकता के अभाव के कारण आज भी अधिकांश युवक–युवतियों का विवाह निर्धारित आयु के पूर्व ही सम्पन्न हो जाता है। जिसके कारण होने वाले बच्चे कुपोषण के शिकार हो रहें हैं।

(2) अंधविश्वास :– मझवार जाति में अंधविश्वास एवं पुरानी विचारधार का दबाव अधिक है। नये विचार की स्वीकार्यता विलम्ब से प्राप्त होती है। जो उनके विकास में बाधक है।

(3) नशा :– मझवार जाति के सदस्यों में नशा की लत सामाजिक विकास में बाधक है। मझवार स्त्री–पुरूषों द्वारा मादक पदार्थ के रूप में शराब तथा हड़िया (चांवल की शराब) का सेवन किया जाता है। जो स्वस्थ्य के साथ–साथ आर्थिक, परिवारिक एवं सामाजिक रूप में भी नुकसान दायक है।

11.2 आर्थिक समस्याएं :–

(1) मझवार परिवारों की कृषि भूमि असंचित एवं पारम्परिक पद्धति पर आधारित एक फसली है। परिवार के विघटन तथा भूमि के बंटवारे के कारण प्रत्येक परिवार के पास पर्याप्त कृषि भूमि का आभाव है, जिससे उत्पादित फसल वर्ष भर हेतु अपर्याप्त होता है।

(2) मझवार परिवारों के सदस्यों को पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध न होने के कारण बेरोजगार रहते हैं। शासकीय निर्माण कार्य्रे में कुछ ही दिन रोजगार मिल पाते हैं।

11.3 शैक्षणिक समस्याएं :–

मझवार जाति में शिक्षा के प्रति जागरूकतोक का अभाव है। अधिकांश सदस्य प्राथमिक स्तर तक ही पढ़ाई करते हैं शिक्षा के क्षेत्र में स्त्री साक्षरता की दर अत्यंत दयनीय है। मझवार शिक्षा ग्रहण करना समय की बर्बादी तथा आर्थिक नुकसान मानते हैं। इसी कारण बालकों को प्राथमिक शिक्षा के पश्चात कृषि संबंधी कार्यो में तथा बालिकाओं को घर के छोटे भाई बहनों की देख भाल में संलग्न कर देते हैं।

11.4 स्वास्थ्य समस्याएं :–

(1) मझवार जाति में अनेक स्वास्थ्यक संबंधी भ्रांतियां तथा अंधविश्वास व्याप्त है। वे रोगग्रस्त होने के स्थिति में उपचार हेतू सर्वप्रथम झाड–फूक एवं देशी इलाज को ही प्राथमिकता देते हैं।

(2) मझवार निवास क्षेत्र में पर्याप्त चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध नहीं है। इस कारण इन क्षेत्रों में अप्रशिक्षित डॉक्टरों द्वारा रोग का ठेका में उपचार किया जाता है। अर्थात किसी रोग के उपचार हेतु राशि पूर्व में तय कर लिया जाता है। जो 1000–1500 रूपये तक होता है। जिसे रोगी के परिवार जन किस्तों में भुकतान करते हैं। इस प्रकार अयोग्य व्यक्ति के हाथों उपचार करवाकर मझवार सदस्य स्वास्थ्य एवं आर्थिक शोषण का शिकार बनते हैं।

(3) मझवार गर्भवती स्त्रीयों द्वारा आयरन एवं कैल्शियम, फोलिकएसिड की गोलियों का पर्याप्त या नियमि सेवन नहीं किया जाता है। जिससे प्रसव के समय में जच्चा बच्चा की जीवन खतरे में रहता है।

उपसंचालक
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
क्षेत्रीय इकाई अम्बिकापुर, सरगुजा छ.ग.

मझवार जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन

संचालनालय आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
सेक्टर-24, नवा रायपुर अटल नगर (छ.ग.)
फोन : 0771-2960530, E-mail : trti.cg@nic.in, web. : www.cgtrti.gov.in